कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का मासिक समाचार बुलेटिन)

जुलाई, 2026 वर्ष :1, अंक : 12

प्रेरणा–स्रोत :

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्रीमान योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :

प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श–मण्डल :

प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
डॉ. अश्विनी कुमार (कुलसचिव)
श्री दीनानाथ यादव (परीक्षा नियंत्रक)

सम्पादक :

प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह-सम्पादक :

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक-मण्डल :

डॉ. शिवम् शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. सत्यम् मिश्र

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :

श्री दिव्यांशु कुमार

वित्त-प्रबन्धन :

श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश -272 202
ईमेल :campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट :www.suksn.edu.in

(सम्पादन-प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : *रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।*

कुलपति-कथन



विगत जून माह में हमारे विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। यह हमारे लिये गर्व की बात रही कि खराब मौसम के बावजूद मा. कुलाधिपति जी हमें प्रत्यक्ष आशीर्वाद देने के लिये न सिर्फ विश्वविद्यालय में पधारी, अपितु एक दिन का आतिथ्य प्राप्त करने का अवसर भी उन्होंने हमें दिया।

हमारे लिये यह भी सन्तोष की बात रही कि सीमित संसाधनों, प्रतिकूल मौसम और ग्रीष्मावकाश के बावजूद हम सफलतापूर्वक इस आयोजन को सम्पन्न कर पाये। इस समारोह में अपने आशीर्वचनों द्वारा हममें उत्साह तथा प्रेरणा का संचार करने वाली माननीया कुलाधिपति जी, अपने विचारों से अभिसिंचित कर प्रोत्साहित करने वाले हमारे मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि, हमारा गौरव तथा उत्साह बढ़ाने के लिये उपस्थित होने वाले कार्य परिषद्, विद्या परिषद् के सम्मानित सदस्य तथा गणमान्य अतिथिगण- सभी के प्रति हृदय से आभार। साथ ही अपनी लगन और परिश्रम से इस आयोजन को सफल बनाने वाले हमारे विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को साधुवाद और पदक एवं उपाधि प्राप्त करने वाले सभी मेधावी विद्यार्थियों-शोधार्थियों के लिये बधाई तथा उज्ज्वल भविष्य के लिये शुभकामनाएं। दीक्षान्त समारोह की कुछ झलकियाँ इस अंक में आपको मिलेंगी।

'कैम्पस कनेक्ट' का यह १२वाँ अंक है। इसका तात्पर्य यह कि विश्वविद्यालय के इस मासिक समाचार बुलेटिन ने अपनी यात्रा का एक वर्ष पूर्ण कर लिया है। यह हमारे लिये प्रसन्नता की बात है कि हमने इन बारह महीनों में 'कैम्पस कनेक्ट' के नियमित अंक निकाले हैं। इसके लिये मैं इसके सम्पादक, सह-सम्पादक और सम्पादक-मण्डल को साधुवाद देती हूँ कि उन्होंने न सिर्फ इस योजना को मूर्त रूप दिया, अपितु नैरन्तर्य भी प्रदान किया और गुणवत्ता को भी बनाये रखा। 'कैम्पस कनेक्ट' हमारे विश्वविद्यालय की गतिविधियों का तो प्रतिबिम्बन कराता ही है, यह विश्वविद्यालय परिवार के लिये एक रचनात्मक मंच भी उपलब्ध कराता है जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी, अधिकारी, कर्मचारी- सभी अपनी सृजनात्मकता को सामने ला सकते हैं। बीते साल भर में अनेक शिक्षकों, शिक्षार्थियों तथा शिक्षणेतर कर्मचारियों की रचनाएं इसमें प्रकाशित भी हुई हैं। परन्तु अभी इसको और विस्तार देने की आवश्यकता है। इसलिये मैं आह्वान करती हूँ कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक, कर्मचारी इससे अधिकाधिक जुड़ें। अध्ययन तो सभी करें, क्योंकि यह आप सबके लिये ही प्रकाशित होता है और आपकी ही गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ इसमें प्रकाशित होती हैं।

इसमें समाचारों के साथ ही बहुत सी ऐसी सामग्री भी संयोजित की जाती है जो रोचक, ज्ञानवर्द्धक तथा उपादेय होती है। इससे यह सभी के लिये उपयोगी हो जाता है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का यह मासिक समाचार बुलेटिन विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर भी रहता है। बेवसाइट पर जाकर कोई भी इसे पढ़ सकता है। अतः अधिकाधिक संख्या में आप सब पढ़ें और इसके सम्बन्ध में अपने विचारों-सुझावों से भी अवगत करायें। इससे इसके स्वरूप को और भी बेहतर करने में हमें सहायता मिलेगी।

जयहिन्द!

-कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन, परमविद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

बुद्ध की करुणा, अहिंसा, प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति-पारावार,
ज्ञान का आलोक, मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा-प्रीति, गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन, परम निर्मल, पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का, आनन्द का, आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था, तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा, महाकरुणा, शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय, ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन, परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही, सिद्धार्थ जिसका नाम।

आया समय निर्माण का...!

यह समय प्रयाण का, आया समय निर्माण का!
आज तुम बढ़े चलो,
लक्ष्य पर चढ़े चलो।
रुक न जाये गति कहीं,
थम न जाये पथ कहीं।
ह्रास न हो आन का, कुछ पान रक्खो मान का!
कर्म में निरत रहें,
दम्भ से विरत रहें।
हों न पथ विचलित कभी,
पुष्प से मुकलित सभी।
वायु में भर गन्ध दें, सौरभ झरे नित प्राण का!
साथ सन्धानित सभी हों,
साथ अनुप्राणित सभी हों।
एक लक्ष्य एक स्वर,
दें जगत में रोर भर।
संगठित, संलग्न हों दृढ़, तीक्ष्ण फल ज्यों बाण का!
मथ सकें सागर मगन हम,
छू सकें उज्ज्वल गगन हम।
मलय सुरभित वायु कर दें,
लौह दिग्स्नायु कर दें।
हम बनें साधन सकल जग दुःख के परित्राण का!

-हरीशकुमार शर्मा

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का दशम दीक्षांत समारोह 29 जून को सम्पन्न

राज्यपाल ने विद्यार्थियों को दिया विकसित भारत, पर्यावरण–संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का संदेश

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के दशम दीक्षांत समारोह में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति श्रीमती आनन्दीबेन पटेल ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए विद्यार्थियों से ज्ञान, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया। समारोह में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह, मुख्य अतिथि एवं प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो. मधूलिका अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार की उच्च शिक्षा राज्य मंत्री रजनी तिवारी, नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय, सांसद जगदम्बिका पाल, विधायक विनय वर्मा, स्थानीय विधायक श्यामधनी राही, विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रजनीकांत पाण्डेय, विद्या परिषद एवं कार्य परिषद के सदस्य, शिक्षकगण, कर्मचारी, अभिभावक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अपने उद्‌बोधन के प्रारंभ में राज्यपाल ने सभी अतिथियों एवं विश्वविद्यालय परिवार का स्वागत ए वं अभिनंदन करते हुए कहा कि दीक्षांत समारोह किसी भी विश्वविद्यालय का अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर होता है। यह केवल उपाधि वितरण का कार्यक्रम नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के जीवन में एक नई यात्रा, नए दायित्व और नए संकल्प का प्रारंभ है।



उन्होंने कहा कि स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ उनके वर्षों के कठिन परिश्रम, अनुशासन, समर्पण और सतत साधना का परिणाम हैं। इस वर्ष विश्वविद्यालय के दशम दीक्षांत समारोह में कुल 37 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए जा रहे हैं, जिनमें 28 छात्राएं एवं 9 छात्र शामिल हैं। राज्यपाल ने विशेष रूप से छात्राओं की उल्लेखनीय उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि स्वर्ण पदकों में बेटियों की इतनी बड़ी भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि आज भारत की महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर रही हैं और राष्ट्र–निर्माण में उनकी भूमिका निरंतर सशक्त हो रही है।

उन्होंने कहा कि जब बेटियाँ आगे बढ़ती हैं तो केवल एक परिवार ही नहीं, बल्कि पूरा समाज और राष्ट्र प्रगति करता है। उन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली सभी छात्राओं और छात्रों का अभिनंदन करते हुए कहा कि यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि उनके माता–पिता, शिक्षकों और समाज के सहयोग का भी परिणाम है। अब उनके जीवन में समाज सेवा और राष्ट्र सेवा का एक नया अध्याय प्रारंभ हो रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की यह भूमि भगवान गौतम बुद्ध की पावन भूमि है, जिसने पूरी दुनिया को मानवता, करुणा, मैत्री और शांति का संदेश दिया। भगवान बुद्ध का चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है और शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भी मानव कल्याण, सामाजिक संवेदनशीलता और सकारात्मक परिवर्तन का निर्माण करना है।

उन्होंने शोध उपाधि प्राप्त करने वाले 25 शोधार्थियों, जिनमें 15 छात्र और 10 छात्राएं शामिल हैं, तथा स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह उपाधियाँ केवल प्रमाण–पत्र नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के ज्ञान, परिश्रम, तपस्या और संकल्प का प्रतीक हैं। उनके लिए अब नए अवसरों के द्वार खुल रहे हैं और उन्हें अपने ज्ञान एवं प्रतिभा का उपयोग समाज और राष्ट्र के विकास के लिए करना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि जीवन में केवल सफलता प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सफलता के साथ संस्कार, समर्पण, करुणा और मानवीय संवेदनाओं का होना भी उतना ही आवश्यक है। विश्वविद्यालयों को ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण करना चाहिए जो समाज और राष्ट्र को आलोकित करने वाले नागरिक बनें।

अपने संबोधन में उन्होंने पर्यावरण–संरक्षण, जल–संरक्षण और सतत विकास पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि जल ही जीवन का आधार है और भविष्य में जल संकट विश्व के समक्ष एक बड़ी चुनौती के रूप में उभर रहा है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक, विशेष रूप से शिक्षित युवाओं को जल–संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के संवर्धन के लिए आगे आना चाहिए।

उन्होंने गुजरात के सूरत नगर में संचालित 'सर्कुलर वाटर प्लान' तथा अहमदाबाद में कचरा प्रबंधन के उदाहरणों का उल्लेख करते हुए कहा कि सकारात्मक और वैज्ञानिक सोच से अपशिष्ट को भी संपदा में परिवर्तित किया जा सकता है। उन्होंने 'वेस्ट टू वेल्थ' की अवधारणा को आत्मनिर्भरता, पर्यावरण–संरक्षण और रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण माध्यम बताया तथा विद्यार्थियों से नवाचार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया।

राज्यपाल ने विकसित भारत–2047 की संकल्पना पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि केंद्र सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं, डिजिटल नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, स्टार्टअप, कौशल विकास और आत्मनिर्भर भारत अभियान ने देश को नई दिशा प्रदान की है। भारत आज वैश्विक स्तर पर अपनी नई पहचान स्थापित कर रहा है और इसमें युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। उन्होंने सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता, बालिकाओं के स्वास्थ्य, आंगनबाड़ी केंद्रों की भूमिका और जनजागरूकता अभियानों पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि समाज के प्रत्येक वर्ग को स्वास्थ्य और शिक्षा से जोड़ना समय की आवश्यकता है।



दहेज प्रथा को समाज की गंभीर कुरीति बताते हुए उन्होंने इसके उन्मूलन के लिए सामूहिक जनभागीदारी का आह्वान किया और कहा कि समाज को इस सामाजिक बुराई के विरुद्ध एकजुट होकर आगे आना होगा। उन्होंने 'मियावाकी वन पद्धति', तालाब–निर्माण, जल–संचयन तथा पर्यावरण–संरक्षण के महत्त्व पर भी विस्तार से चर्चा की और कहा कि जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान और पर्यावरणीय चुनौतियों को देखते हुए प्रकृति–संरक्षण प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

राज्यपाल ने बताया कि राजभवन द्वारा प्रदेश के 38 विश्वविद्यालयों एवं उनसे संबद्ध महाविद्यालयों की विस्तृत समीक्षा की

गई है और उनकी गुणवत्ता, आधारभूत सुविधाओं एवं शैक्षणिक विकास के लिए व्यापक कार्ययोजना तैयार की जा रही है। अपने उद्‌बोधन के समापन पर उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपनी शिक्षा और प्रतिभा का उपयोग केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास के लिए करें। 'विकसित भारत–2047' के संकल्प को साकार करने में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है और भारत की युवा शक्ति ही देश को विश्व मंच पर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएगी।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की पूर्व संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष माननीय प्रो मधुलिका अग्रवाल ने अपने दीक्षांत भाषण में विद्यार्थियों को विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A. I.), रोबोटिक्स, नैनो टेक्नोलॉजी, ड्रोन एवं क्वांटम टेक्नोलॉजी जैसी उभरती तकनीकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सफलता के लिए आजीवन सीखने तथा नवाचार और अनुसंधान को अपनाना आवश्यक है। पर्यावरण–संरक्षण, हरित प्रौद्योगिकी तथा सतत विकास को भविष्य की प्रमुख आवश्यकता बताते हुए उन्होंने



युवाओं से प्रकृति के प्रति उत्तरदायी बनने का आग्रह किया।

उन्होंने विद्यार्थियों को परिश्रम, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रसेवा की भावना के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साथ ही, बदलती तकनीकों को अवसर के रूप में स्वीकार कर उनके विशेषज्ञ बनने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास का सशक्त साधन है। अंत में उन्होंने सभी उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्राप्त विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित उत्तर प्रदेश की मा. शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रजनी तिवारी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण में युवाओं की



भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज आवश्यकता है कि युवा सतत विकास, जल–संरक्षण, स्वच्छता और हरित प्रौद्योगिकी को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ युवाओं को नवाचार, कौशल विकास, स्वरोजगार और उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने के लिए निरंतर प्रोत्साहित कर रही हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थी इन अवसरों का लाभ उठाकर न केवल अपना उज्ज्वल भविष्य निर्मित करेंगे, बल्कि विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

अपने स्वागत संबोधन में कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, माननीय कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल के प्रेरणादायी नेतृत्व में शैक्षणिक उत्कृष्टता की दिशा में निरंतर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि कुलाधिपति महोदया के नवाचारी दृष्टिकोण एवं राजभवन के सतत सहयोग से विश्वविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण, रोजगारोन्मुख एवं कौशल–सम्पन्न शिक्षा को बढ़ावा मिला है, जिससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त



हुआ है।

उन्होंने आगे बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) के अंतर्गत प्राप्त लगभग 13.53 करोड़ रुपये के अनुदान से विश्वविद्यालय में आधारभूत संरचना का व्यापक विकास किया गया है। केंद्रीय पुस्तकालय, स्मार्ट कक्षाओं, आधुनिक प्रयोगशालाओं तथा डिजिटल शिक्षण सुविधाओं का विस्तार कर विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया गया है। वर्तमान में विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तथा नए विषयों एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।



कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति कर रहा है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों द्वारा अब तक 170 से अधिक शोध–पत्र प्रकाशित किए जा चुके हैं, जबकि ८६ शोध अनुदान परियोजनाओं एवं 12 पेटेंट के माध्यम से भी ज्ञान–सृजन में योगदान दिया गया है। शोध को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विवि द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ अनेक समझौता–ज्ञापन (MoU) संपादित किए गए हैं, जिनसे संयुक्त शोध, शैक्षणिक आदान–प्रदान एवं नवाचार गतिविधियों को गति मिली है।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A. I.), नवाचार, स्टार्टअप, उद्यमिता एवं कौशल–विकास से संबंधित

गतिविधियों को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। विश्वविद्यालय के शिक्षक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों से संस्थान को नई पहचान दिला रहे हैं। साथ ही, छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए खेल तथा सांस्कृतिक एवं सामुदायिक गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रो. शाह ने कहा कि राजभवन के सतत मार्गदर्शन और सहयोग से विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गुणवत्ता, शोध उत्कृष्टता और प्रशासनिक पारदर्शिता को नई दिशा मिली है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय आने वाले वर्षों में राष्ट्रीय स्तर पर भी उच्च शिक्षा एवं शोध का एक अग्रणी केंद्र बनकर उभरेगा। इससे पूर्व कुलाधिपति ने 37 स्वर्ण पदक अपनी अपनी कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रदान किये तथा 25 शोधार्थियों को पीएच.डी. की उपाधियाँ प्रदान कीं। इस अवसर पर 52176 स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने वाले छात्राओं को भी राज्यपाल के कर–कमलों द्वारा उपाधियाँ उपलब्ध हुईं। इस अवसर पर डिजीलॉकर पर 52176 अंकपत्रों को भी अपलोड किया गया।



समारोह में सांसद जगदम्बिका पाल, नेता विपक्ष माता प्रसाद पांडेय, विधायक श्याम धनी राही, पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री सतीश द्विवेदी, विधायक विनय वर्मा, पूर्व कुलपति प्रो रजनीकांत पांडेय, श्री विपुल शाह, न्यायमूर्ति श्री अनिल कुमार, डॉ मंजू मिश्रा, डॉ अशोक



कुमार एवं डॉ हरिहर प्रसाद जैसे अनेक माननीय जनों के साथ ही कार्य परिषद् एवं विद्या परिषद् के सदस्यगण, नेपा नई दिल्ली के वर्तमान चांसलर प्रो रमा शंकर दुबे सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी, जनप्रतिनिधिगण तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्रगीत से एवं समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

दिव्यांगजन सशक्तिकरण हेतु विकसित 'केबो' सॉफ्टवेयर का हुआ अनावरण

दशम दीक्षांत समारोह के अवसर पर दिव्यांगजनों की सुविधा एवं सशक्तीकरण को ध्यान में रखते हुए विकसित 'केबो' (KEBO) सॉफ्टवेयर का अनावरण माननीय कुलाधिपति महोदया के करकमलों द्वारा किया गया। 'केबो' सॉफ्टवेयर का उद्देश्य दिव्यांगजनों को डिजिटल माध्यम से अधिक सुलभ, समावेशी एवं प्रभावी सेवाएँ प्रदान करना है। यह सॉफ्टवेयर विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के साथ–साथ शिक्षा, सूचना एवं संचार के क्षेत्र में उनकी सहभागिता को बढ़ावा देगा।

'किलकारी' तथा 'कलरव' का लोकार्पण

महामहिम के कर–कमलों द्वारा सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं एवं कर्मचारियों के बच्चों की देखभाल के लिए टाइप–3 में नव विकसित 'किलकारी' बाल देखभाल केंद्र (डे–केयर सेंटर) एवं परिसर के छोटे बच्चों के मनोरंजन एवं शारीरिक विकास के लिए विभिन्न उपकरणों से सज्जित कर विकसित किये गये बाल–उपवन 'कलरव' का अनावरण किया गया।

ध्यातव्य है कि यह सुविधा विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों के छोटे बच्चों के लिए विकसित की गई है, जिससे वे सुरक्षित एवं व्यवस्थित वातावरण में रह सकें तथा शिक्षक एवं



कर्मचारी अपने दायित्वों का अधिक प्रभावी ढंग से निर्वहन कर सकें।

'उत्कर्ष', 'वार्षिक रिपोर्ट' एवं 'कैम्पस कनेक्ट' का विमोचन

दीक्षांत कार्यक्रम में राजपाल, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं कुलपति के द्वारा दीक्षांत स्मारिका 'उत्कर्ष', 'वार्षिक प्रतिवेदन' तथा



विश्वविद्यालय के मासिक समाचार बुलेटिन 'कैम्पस कनेक्ट' के जून अंक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर 'उत्कर्ष' तथा 'कैम्पस कनेक्ट' के सम्पादक प्रो. हरीशकुमार शर्मा तथा 'वार्षिक प्रतिवेदन' के सम्पादक प्रो. सौरभ भी मंच पर उपस्थित रहे।

मेधावियों को प्रदान किये गए मेडल

विश्वविद्यालय में दशम दीक्षांत के अवसर पर सौम्या को बी. एड., अपराजिता दुबे को बी. ए., ओम जी सिंह को बी. एससी. कृषि, रतनबाला सिंह को एम. एड., फैजान खान को एम.एससी. गणित, दीपिका यादव को एम.एससी. जंतु विज्ञान, आस्था यादव को बी. एससी., आकांक्षा गुप्ता को एम. ए. राजनीति शास्त्र, हिना मिर्जा को बी. कॉम., विपुल चौधरी को एम. ए. अर्थशास्त्र, कु. अर्चिता मिश्रा को एम. ए. इतिहास, सदफ शाहीन को बी.सी.ए., अवनीश कुमार यादव को बी.बी.ए., हिमांशु जायसवाल को एल.एल.बी., शिवांगी त्रिपाठी को एम. ए. मनोविज्ञान, कुमारी विशनावती विश्वकर्मा को एम.ए. दृश्य कला, श्वेता कसौधन को एम.कॉम., काजल यादव को एम.एससी. वनस्पति विज्ञान, सची मिश्रा को एम.एससी. एजी. एग्रोनॉमी, उषा जायसवाल को एम.बी.ए., आशा फरहत को एम.ए. लोक प्रशासन, खुशबू यादव को एम.एससी. भौतिकी विज्ञान, श्रेया अग्रहरि को एम. एससी. बायोटेक्नोलॉजी, श्वेता राव को एम.एससी. एजी. एक्सटेंशन, रत्नेश मिश्रा को एम.ए. संस्कृत, शिवांगी तिवारी को एम.ए. गृह विज्ञान, कु. बुशरा अंजुम को एम.ए. उर्दू, स्वाति सिन्हा को एम. एससी. हॉर्टिकल्चर, वंदना शर्मा को एम.ए. प्राचीन इतिहास, अभिषेक

यादव को एम. एससी. रसायन विज्ञान, कु. श्वेता वर्मा को एम. ए. भूगोल, अब्दुल कदीर को एम. ए. शिक्षा शास्त्र, कु. नेहा कृष्णा यादव



को एम. ए. हिंदी, गोल्डी मौर्य को एम. ए. समाजशास्त्र, नवमी नाथ को एम. एससी. रक्षाविज्ञान एवं स्ट्रेटजिक अध्ययन, कु. वैष्णवी जायसवाल को एम.ए. अंग्रेजी तथा प्रियंका कुमारी को बी.पी.एड. में स्वर्ण पदक प्रदान किये गये।

ग्यारह मेधावियों को दिए गए डोनर स्वर्ण पदक

सौम्या को राजा रतन सेन स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रो सुमित्रा सिंह स्वर्ण पदक, अपराजिता दुबे को ठाकुर वेणी माधव सिंह स्मृति स्वर्ण पदक, ओम जी सिंह को स्व द्वारका नाथ सिंह एवं श्रीमती द्रोपदी सिंह स्वर्ण पदक एवं श्री उमेश चंद्र त्रिपाठी स्वर्ण पदक, रत्न बाला सिंह को श्रीमती जानकी सिंह स्वर्ण पदक, फैजान खान को प्रो. सिब्बन लाल सक्सेना स्वर्ण पदक, दीपिका यादव को श्रीमती राम



दुलारी लखेर स्वर्ण पदक, आस्था यादव को स्व. प्रेमलता पांडेय स्मृति स्वर्ण पदक, आकांशा गुप्ता को स्व. कमाल युसूफ मलिक स्मृति स्वर्ण पदक, हिना मिर्जा को हरिद्वार भट्ट सोनपती देवी स्मृति स्वर्ण पदक, विपुल चौधरी को अयोध्या प्रसाद द्विवेदी स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किये गए।

छोटे बच्चे पुरस्कृत

दीक्षांत के अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँवों के पूर्व माध्यमिक विद्यालय बर्डपुर के बच्चों प्रतिज्ञा, एकता कनौजिया, रजनी गुप्ता, रेशमी गुप्ता, मीनाक्षी, रौशनी विश्वकर्मा एवं कम्पोजिट पूर्व माध्यमिक विद्यालय, काशीपुर की राधिका, अर्चना, प्रिया, रोशनी ने पर्यावरण–संरक्षण पर आधारित एक कविता का गायन किया, जिसके बाद इन छात्र–छात्राओं को राज्यपाल के करकमलों से प्रमाणपत्र वितरित किये गये। इस क्रम में विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँव में आयोजित प्रतियोगिताओं में भाषण प्रतियोगिता में उच्च प्राथमिक विद्यालय बर्डपुर की कक्षा ७ की छात्रा खुशी कुमारी को भाषण–प्रतियोगिता, कक्षा ८ की छात्रा रजनी गुप्ता को कहानी प्रतियोगिता, मधु को चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए प्रमाणपत्र वितरित किये गए।

पीएच. डी. शोधार्थियों को प्रदान की गयी उपाधि

दशम दीक्षांत समारोह में पीएच.डी. पूर्ण कर चुके शोधार्थियों में कला संकाय के अंतर्गत अभिनय त्रिपाठी को राजनीति शास्त्र, विशाल प्रकाश को भूगोल, लक्ष्मी नाथ पांडेय को हिंदी, अमृता जोंसन को प्राचीन इतिहास, अंकिता पाठक को प्राचीन इतिहास, अवधेश कुमार को प्राचीन इतिहास, भरत गौतम को इतिहास, प्रदीप कुमार को भूगोल, जितेंद्र कुमार पाल को भूगोल, दिव्या सिंह को भूगोल, अतुल दुबे समाजशास्त्र, अर्चना भट्ट को राजनीति शास्त्र, दिवाकर सिंह को भूगोल, शिवम कुमार मिश्रा को प्राचीन इतिहास, सरोज कसौधन को हिंदी, निशांत सिंह को हिंदी, गिरिजेश कुमार पटेल को प्राचीन इतिहास विषयों में पीएच.डी की उपाधि प्रदान की गयी। वाणिज्य



संकाय में हर्ष सनवाल, दीपिका सेठ, रानी द्विवेदी, प्रतिभा पाण्डेय, आर्यन प्रियदर्शनी को एवं विज्ञान संकाय में लवकुश पांडेय एवं शिक्षा संकाय में हर्षिता सिंह एवं गोपाल सिंह को शोध उपाधि प्रदान की गई।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों की पुस्तकों का विमोचन

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के दशम दीक्षांत समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों द्वारा लिखित पुस्तकों का अनावरण माननीय कुलाधिपति महोदया के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार के लिए यह अत्यंत गौरवपूर्ण क्षण रहा। अनावरण की गई पुस्तकों में प्रो. नीता यादव की 'चितेरी रुचि : फोक आर्ट ऑफ बुंदेलखंड', प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव की 'आर्गेनिक केमिस्ट्री', प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे की 'भारत–नेपाल सम्बन्ध : हिन्दी भाषा, साहित्य एवं विविध आयाम', प्रो. लक्ष्मण सिंह की 'सिंथेसिस, एप्लीकेशन एंड फ्यूचर पर्सपेक्टिव्स ऑफ स्मार्ट



ननोमटेरिअल्स', डॉ. रक्षा की 'जेंडर एंड वीमेन एम्पावरमेंट बेहवियरल', डॉ. अरविंद कुमार रावत की 'भारतीय प्रशासन', डॉ. किरण गुप्ता एवं डॉ. कपिल गुप्ता की 'क्सेनोबिओटिक्स इन एनवायरनमेंट इम्पैक्ट डिटेक्शन एंड इट्स रेमेडिएशन' तथा डॉ. रविकांत शुक्ला की 'कंटेम्परारी इश्यूज इन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन' शामिल हैं।

अधिकारियों को प्रशस्ति प्रमाणपत्र

सिद्धार्थनगर जिले के पुलिस अधीक्षक एवं मुख्य विकास अधिकारी, संत कबीरनगर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, मुख्य विकास अधिकारी एवं महराजगंज के मुख्य विकास अधिकारी को माननीय राजपाल महोदया के करकमलों द्वारा ६–१४ वर्ष की ६०० बालिकाओं का टीकाकरण करने हेतु प्रशस्ति प्रमाणपत्र दिए गए।

चार शिक्षक सम्मानित

दशम दीक्षांत के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं उससे सम्बद्ध चार जनपदों में कार्यरत महाविद्यालयों के शिक्षको में से चार शिक्षकों को श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ. शिवम शुक्ल, रतन सेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांसी के बी. एड. विभाग के सहायक आचार्य हंस राज कुशवाहा, इसी महाविद्यालय के डॉ. कमलेश कुमार एवं राजकीय महाविद्यालय, तिघोड़वा, डुमरियागंज की डॉ. (श्रीमती) विद्यावती को माननीय राजपाल महोदया द्वारा ५००० रुपए का चेक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

आँगनवाड़ी के बाल–पुष्पों को सामग्री वितरित

विश्वविद्यालय के अष्टम दीक्षांत समारोह के अवसर पर आँगनवाड़ी बाल–पुष्पों को ट्राई साइकिल, झूले वाले घोड़े, नंबर्स गेम, ए बी सी डी गेम, फल, एनिमल्स गेम, ब्लॉक गेम, पज्जल्स, बोलल, क्ले गोलियां बनाने के लिए, रिंग्स, पंचतंत्र स्टोरी बुक, एजुकेशनल मैप, वाइट बोर्ड, मार्कर डस्टर्स एवं कुर्सी आदि सामग्री वितरित की गयी। इस अवसर पर सिद्धार्थनगर, संत कबीरनगर, महराजगंज के जिलाधिकारी भी उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति एवं तीन शिक्षक विश्व के शीर्ष 5 वैज्ञानिकों में शामिल

7 जून, 2026। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति प्रो. कविता शाह को प्रतिष्ठित साइरैंक ग्लोबल रजिस्ट्री–2025 में विश्व के शीर्ष 5 प्रतिशत वैज्ञानिकों में स्थान प्राप्त हुआ है। यह उपलब्धि उनके उत्कृष्ट शोध कार्यों, वैज्ञानिक योगदान तथा अकादमिक उत्कृष्टता का वैश्विक स्तर पर प्रमाण है। उनके साथ ही



इस श्रेणी में विश्वविद्यालय के तीन अन्य शिक्षक प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, डॉ. आजाद कुमार (रसायन विज्ञान) तथा डॉ. दीपक कुमार (प्रबन्धन अध्ययन) भी सम्मिलित हुए हैं जो विश्वविद्यालय के लिये गर्व की बात है। कुलपति ने सूची में सम्मिलित सभी शिक्षकों को बधाई दी है।

प्रो. कविता शाह देश की प्रतिष्ठित पर्यावरण वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने पर्यावरण–संरक्षण, सतत विकास, प्रदूषण–नियंत्रण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध कार्य किए हैं। उनके शोध कार्यों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक मान्यता प्राप्त हुई है। साइरैंक ग्लोबल द्वारा वैज्ञानिकों का चयन शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता, अंतरराष्ट्रीय उद्धरणों (Citations), शोध–प्रभाव, नवाचार तथा अकादमिक योगदान जैसे विभिन्न मानकों के आधार पर किया जाता है।

प्रो. कविता शाह की यह उपलब्धि न केवल उनके व्यक्तिगत शोध एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता का सम्मान है, बल्कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के लिए भी गौरव का विषय है। उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध, नवाचार एवं सतत विकास के क्षेत्रों में निरंतर प्रगति कर रहा है।

विश्वविद्यालय परिवार ने प्रो. कविता शाह को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी तथा उच्च शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। विश्वविद्यालय परिवार ने विश्वास व्यक्त किया है कि प्रो. कविता शाह के कुशल नेतृत्व में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा।

प्रो. शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय अपनी बाल्यावस्था से आगे बढ़ रहा है और मुझे प्रसन्नता है कि हमारे शिक्षक एवं शोधार्थी बहुत मेहनत कर के तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं तथा अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पेटेंट के साथ सशक्त रूप से बुद्ध की इस धरा को विकसित करने में अपना योगदान दे रहे है। मेरा विश्वास है कि शीघ्र ही यह विश्वविद्यालय अल्प समय में ही अन्य लंबी अवधि से स्थापित विश्वविद्यालय की श्रेणी में आ जाएगा। माँ सरस्वती, महात्मा बुद्ध, माननीय प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी एवं राज्यपाल महोदया के आशीर्वाद से, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय अपने पथ पे आगे बढ़े, यही शुभकामना करती हूँ।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के दशम दीक्षांत समारोह के सम्बन्ध में कुलपति की प्रेसवार्ता

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में 29 जून, 2026 को आयोजित होने वाले 10वें दीक्षांत समारोह के संबंध में दिनांक 19.06.2026 को विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि विश्वविद्यालय का 10वाँ दीक्षांत समारोह पूरे उत्साह, उल्लास एवं गरिमा के साथ आयोजित किया जाएगा। विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के दस वर्ष पूर्ण कर ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है और यह दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों, शोध–परंपरा तथा संस्थागत विकास का महत्वपूर्ण उत्सव होगा।



कुलपति ने बताया कि समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल करेंगी। मुख्य अतिथि के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय की प्रख्यात पर्यावरण वैज्ञानिक एवं पर्यावरण विज्ञान की वरिष्ठ विदुषी प्रो. मधूलिका अग्रवाल उपस्थित रहेंगी। प्रो. अग्रवाल ने ओजोन परत में हो रहे क्षरण, जलवायु–परिवर्तन तथा पर्यावरणीय चुनौतियों पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री श्री योगेन्द्र उपाध्याय तथा उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रजनी तिवारी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में होगा मुख्य समारोह तीनों संकायों में होगा लाइव प्रसारण

कुलपति प्रो. कविता शाह ने बताया कि इस वर्ष दीक्षांत समारोह का मुख्य आयोजन विश्वविद्यालय के गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में किया जाएगा। चूँकि प्रेक्षागृह में बैठने की क्षमता सीमित है, इसलिए सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

उन्होंने बताया कि दीक्षांत समारोह का सीधा प्रसारण कला संकाय भवन, विज्ञान संकाय भवन तथा वाणिज्य संकाय भवन में किया जाएगा। कला संकाय, विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के शिक्षक एवं विद्यार्थी अपने–अपने संकायों में उपस्थित रहकर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देखेंगे तथा वहीं से दीक्षांत समारोह से जुड़ेंगे। विज्ञान संकाय की 18 कक्षाओं सहित विभिन्न निर्धारित स्थलों पर एल.ई.डी. स्क्रीन एवं अन्य तकनीकी व्यवस्थाओं के माध्यम से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया जाएगा, जिससे अधिकाधिक विद्यार्थी इस ऐतिहासिक अवसर के सहभागी बन सकें।

37 स्वर्ण पदक एवं 25 पीएच.डी. उपाधियाँ प्रदान की जाएंगी

कुलपति ने बताया कि इस वर्ष विभिन्न विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को कुल 37 स्वर्ण पदक प्रदान किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त 25 शोधार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शोध एवं अकादमिक उत्कृष्टता को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

'किलकारी' बालगृह एवं दिव्यांग–अध्ययन सुविधा का होगा लोकार्पण

दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय राज्यपाल द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में नव निर्मित बालगृह 'किलकारी' का लोकार्पण किया जाएगा। कुलपति ने बताया कि यह सुविधा विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों के छोटे बच्चों के लिए विकसित की गई है, जिससे वे सुरक्षित एवं व्यवस्थित वातावरण में



रह सकें तथा शिक्षक एवं कर्मचारी अपने दायित्वों का अधिक प्रभावी ढंग से निर्वहन कर सकें।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का पुस्तकालय पूर्णतः डिजिटल स्वरूप में विकसित किया जा चुका है। इसी क्रम में दिव्यांग विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु विशेष सुविधा भी विकसित की गई है, जिसका लोकार्पण भी कुलाधिपति द्वारा किया जाएगा।

उत्कृष्ट शिक्षकों का होगा सम्मान

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर एवं संबद्ध महाविद्यालयों के चार शिक्षकों को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक, शोध एवं संस्थागत योगदान के लिए सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए नामांकन एवं चयन–प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई है तथा निर्धारित स्क्रीनिंग प्रक्रिया के उपरांत अंतिम चयन किया जाएगा।

गोद लिए गए गाँवों के सात वर्षों के कार्यों की पुस्तिका होगी जारी

दीक्षांत समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँवों में विगत सात वर्षों के दौरान किए गए विकासात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक कार्यों पर आधारित एक विशेष पुस्तिका का विमोचन भी किया जाएगा। इसके साथ ही विश्वविद्यालय स्तर पर विशेष स्वच्छता अभियान का आयोजन किया जाएगा।

25 जून तक चलेगा 'दीक्षा उत्सव'

कुलपति ने बताया कि दीक्षांत समारोह से पूर्व आयोजित 'दीक्षा उत्सव' का शुभारम्भ 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण एवं विशेष व्याख्यान के साथ किया गया था। विश्वविद्यालय परिसर में मियावाकी फॉरेस्ट पद्धति से वृक्षारोपण किया गया है। यह उत्सव 25 जून तक चलेगा।

दीक्षा उत्सव के अंतर्गत पेंटिंग प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, काव्य–पाठ प्रतियोगिता, लोकनृत्य प्रतियोगिता, देशभक्ति–गीत प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता सहित विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय परिसर के साथ–साथ संबद्ध महाविद्यालयों में भी इन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

'कैंपस कनेक्ट' पत्रिका एवं दीक्षांत लोगो का विमोचन

प्रेस वार्ता के दौरान कुलपति प्रो. कविता शाह ने विश्वविद्यालय की मासिक समाचार पत्रिका 'कैंपस कनेक्ट' के मई अंक का विमोचन किया। उन्होंने बताया कि यह पत्रिका विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के 10वें दीक्षांत समारोह के आधिकारिक लोगो का भी औपचारिक लोकार्पण किया गया।

प्रधानमंत्री जी का शुभकामना–संदेश प्राप्त

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के दस वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का शुभकामना संदेश प्राप्त हुआ है। अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई देते हुए डिजिटल नवाचार, वैश्विक दृष्टि तथा राष्ट्र निर्माण में विश्वविद्यालय की भूमिका की सराहना की है।

प्रधानमंत्री जी ने अपने संदेश में स्टार्टअप, राष्ट्रीय सुरक्षा, ऊर्जा संसाधन, 'मेक इन इंडिया', 'मेड इन इंडिया', सांस्कृतिक विरासत संरक्षण, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस तथा विभिन्न राष्ट्रीय अभियानों में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता की अपेक्षा व्यक्त करते हुए विश्वविद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ दी हैं।

समयबद्ध शैक्षणिक गतिविधियों के लिए विश्वविद्यालय प्रतिबद्ध

कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की भावना के अनुरूप समयबद्ध शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन के लिए प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय द्वारा समय पर पाठ्यक्रम पूर्ण कराया गया, समयबद्ध परीक्षाएँ आयोजित की गईं, मूल्यांकन कार्य सम्पन्न कराया गया तथा परीक्षा परिणाम भी निर्धारित समय में घोषित किए गए। जुलाई माह से विश्वविद्यालय पूर्णतः नियमित शैक्षणिक सत्र के साथ नई ऊर्जा के साथ कार्य प्रारम्भ करेगा।

योग भारत की जीवनदायिनी परंपरा

प्रेस वार्ता में कुलपति ने आगामी 21 जून को आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की जानकारी देते हुए कहा कि योग भारत की प्राचीन एवं जीवनदायिनी परंपरा है। आज सम्पूर्ण विश्व योग की उपयोगिता एवं प्रभावशीलता को स्वीकार कर रहा है। उन्होंने कहा कि युवाओं और आने वाली पीढ़ियों को योग से जोड़ना समय की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री के आह्वान पर विश्वविद्यालय में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

ये रहे उपस्थित

प्रेस वार्ता में कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव, आइक्यूएसी निदेशक प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता शैक्षणिक प्रो. जितेन्द्र कुमार सिंह, हिंदी विभाग के आचार्य प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे, इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. यशवंत यादव, संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. धर्मेन्द्र सहित सिद्धार्थनगर जनपद के विभिन्न प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकार बंधु उपस्थित रहे।

पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

दिनांक 05.06.2026 दिन शुक्रवार को विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की एन.सी.सी. इकाई द्वारा माननीय कुलपति महोदया प्रोफेसर कविता शाह की अध्यक्षता में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर कुलपति ने पर्यावरण–संरक्षण व वृक्षों के महत्व बताते हुए कहा कि विश्व के सतत विकास के लिए

यह एक महत्वपूर्ण कार्य है और समय–समय पर हमें वृक्षारोपण करते हुए इनका संरक्षण भी करना चाहिए।

इस अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने पर्यावरण संरक्षण को न केवल वर्तमान पीढ़ी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण बताया। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय



के परीक्षा नियंत्रक दीना नाथ यादव ने कहा कि पर्यावरण–संरक्षण केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि हम सभी की जिम्मेदारी है। इस अवसर पर अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो. नीता यादव ने कहा कि हमें वृक्ष केवल आज के दिन नहीं लगाना चाहिए बल्कि इसको निरंतर लगाना चाहिए।

आयोजन में एनसीसी ऑफिसर (ले0) डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी ने सभी कैडेट्स को वृक्षारोपण हेतु प्रोत्साहित करने के साथ–साथ इनके संरक्षण की भी आवश्यकता बतायी और कहा कि हमें समाज के अधिक से अधिक लोगों को इस कार्य हेतु समय–समय पर प्रोत्साहित करना चाहिए। इस अवसर पर हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र दुबे, डॉ यशवंत यादव, डॉ सरिता सिंह, एनसीसी कैडेट्स सीनियर अंडर ऑफिसर नागेन्द्र यादव, अंडर ऑफिसर कमलेश प्रजापति, अंडर ऑफिसर, शालिनी पाण्डेय, विशाल कुमार, रामू यादव, रजनीश, सचिन यादव, कुशल त्रिपाठी, अंकुश चौधरी, आलोक कुमार, कल्पना यादव, मुस्कान यादव, चांदनी चौधरी, मनीषा कुमारी, सुधा पाण्डेय, सबा परवीन, नरगिश परवीन, करिश्मा यादव, सपना, व कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में कुलपति–शोधार्थी संवाद कार्यक्रम आयोजित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 6 जून (शनिवार) को 'कुलपति–शोधार्थी–संवाद' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया। संवाद कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो. कविता शाह ने शोधार्थियों से सीधे संवाद स्थापित करते हुए गुणवत्तापूर्ण, नवाचारपरक एवं रोजगारोन्मुखी शोध कार्यों के लिए प्रेरित किया।

कुलपति ने कहा कि उच्च शिक्षा में शोध का विशेष महत्व है। शोध किसी विषय के प्रति गहन समझ विकसित करने के साथ–साथ समाज की समस्याओं के समाधान का भी प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि शोधार्थियों को अपने शोध कार्य को उत्कृष्ट दिशा प्रदान करने, नवीन तकनीकों को अपनाने तथा समाजोपयोगी विषयों पर कार्य करने के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय की विभिन्न शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय सहयोग प्रदान करने का भी आह्वान शोधार्थियों से किया।

संवाद के दौरान शोध–प्रकाशन, पेटेंट, अनुसंधान परियोजनाओं, कार्यशालाओं तथा सांख्यिकीय उपकरणों के प्रभावी उपयोग पर विस्तार से चर्चा की गई। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा शोधार्थियों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं तथा शोध उन्मुख गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा, जिससे उनके शोध कार्यों की गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि हो सके। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा नवीन प्रयोगात्मक एवं बहुविषयी शोध कार्यक्रमों के माध्यम से शोधार्थियों को आधुनिक अनुसंधान पद्धतियों से जोड़ा जा रहा है।

कुलपति ने शोधार्थियों से अपेक्षा की कि प्रत्येक शोधार्थी वर्ष में कम से कम दो शोधपत्र प्रकाशित करे, जिनमें एक राष्ट्रीय तथा एक अंतरराष्ट्रीय शोध–पत्रिका में प्रकाशित हो। साथ ही प्रत्येक शोधार्थी को कम से कम दो राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में अपने शोध कार्य प्रस्तुत करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पेटेंट प्राप्त होने अथवा उच्च गुणवत्ता वाली अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध कार्य प्रकाशित होने पर विश्वविद्यालय द्वारा शोधार्थियों को प्रोत्साहन एवं पारितोषिक प्रदान किया जाएगा।

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने भौतिक विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य एवं शोध–निर्देशक डॉ. अमरजीत यादव तथा उनकी शोधार्थी अंजली सिंह को अंतरराष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इसे विश्वविद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए संबंधित शोध कार्य को शीघ्र प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (टेक्नोलॉजी ट्रांसफर) के माध्यम से समाज के उपयोग में लाने के लिए प्रेरित किया।

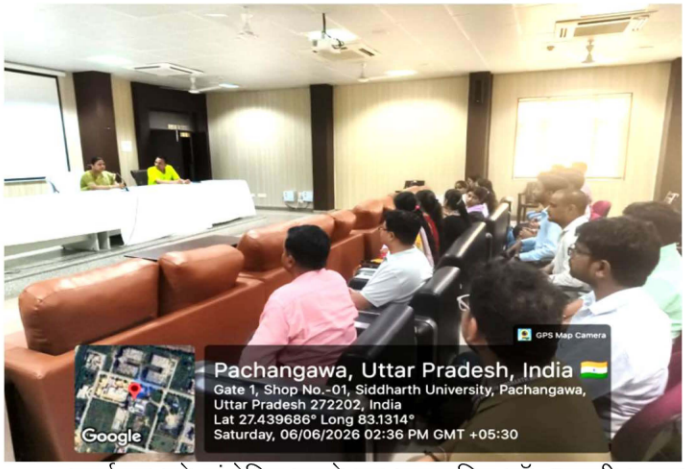

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि शोध एवं नवाचार किसी भी विश्वविद्यालय की पहचान और प्रगति के प्रमुख आधार हैं। उन्होंने शोधार्थियों से अनुशासन, समर्पण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ अनुसंधान कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन शोधार्थियों को आवश्यक संसाधन, मार्गदर्शन तथा अनुकूल शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। शोधार्थियों की उपलब्धियाँ विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संवाद कार्यक्रम के दौरान शोधार्थियों ने अपने शोध कार्यों से संबंधित विभिन्न प्रश्न, सुझाव एवं जिज्ञासाएं कुलपति के समक्ष प्रस्तुत कीं, जिनका विस्तार से समाधान किया गया। कार्यक्रम का समापन शोध एवं नवाचार को नई दिशा प्रदान करने के संकल्प के साथ किया गया।

दीक्षांत समारोह से पूर्व अंतिम वर्ष के सभी परीक्षा–परिणाम घोषित

8 जून, 2026। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 29 जून 2026 को आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह के दृष्टिगत विश्वविद्यालय द्वारा अंतिम वर्ष के सभी विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम समयबद्ध रूप से घोषित करने की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गई है।

कुलपति प्रो० कविता शाह ने अपने संदेश में कहा कि दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की जानी हैं। इसके लिए यह आवश्यक था कि अंतिम वर्ष की सभी परीक्षाएं संपन्न कराकर उनका मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणाम समय से घोषित कर दिया जाए। विश्वविद्यालय ने अत्यंत कम समय में परीक्षा आयोजन, उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन तथा परीक्षा परिणामों की घोषणा का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया है। उन्होंने विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग की सराहना करते

हुए कहा कि विद्यार्थियों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए यह कार्य निर्धारित समयसीमा में पूर्ण किया गया है।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने बताया कि इसी क्रम में आज बी.एड. द्वितीय वर्ष तथा बी.ए., बी.एससी. एवं बी.कॉम. षष्ठ सेमेस्टर के परीक्षा परिणाम घोषित किए जा रहे हैं। इनके साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा अंतिम वर्ष की सभी प्रमुख परीक्षाओं के परिणाम घोषित किए जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का प्रयास रहा है कि विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा एवं रोजगार संबंधी अवसरों में किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा दीक्षांत समारोह में पात्र विद्यार्थियों को उनकी उपाधियाँ समय से उपलब्ध कराई जा सकें। परीक्षा परिणाम विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध हैं, जहां विद्यार्थी अपना परिणाम देख सकते हैं।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं को यू. के. पेटेंट की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अमरजीत यादव एवं उनकी शोध छात्रा अंजली सिंह



द्वारा विकसित "डाटा प्रोसेसिंग डिवाइस फॉर बायोफिजिक्स मॉनिटरिंग एवं बायो मॉलेक्यूलर डाटा एनालिसिस मशीन" के मॉडल को यूनाइटेड किंगडम (यू. के.) द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय एवं उच्च शिक्षा जगत के लिए गौरव का विषय है। डॉ. अमरजीत यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि यू. के. के कम्प्ट्रोलर जनरल ऑफ पेटेंट्स, डिजाइन्स एंड ट्रेड मार्क्स द्वारा जारी प्रमाण–पत्र के अनुसार इस आविष्कार को पेटेंट डिजाइन संख्या 6527053 प्रदान की गई है। इस शोध एवं नवाचार कार्य में उनकी शोध छात्रा अंजली सिंह का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।



उन्होंने बताया कि यह मशीन बायोफिजिक्स मॉनिटरिंग एवं बायो–मॉलेक्यूलर डाटा के विश्लेषण में उपयोगी सिद्ध होगी। इस तकनीक के पेटेंट होने से बायोफिजिक्स एवं जैविक अनुसंधान के क्षेत्र में नवीन संभावनाओं के द्वार खुलेंगे तथा शोध कार्यों को आधुनिक तकनीकी आधार प्राप्त होगा।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने शोध टीम को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में नवाचार एवं शोध संस्कृति को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के अन्य शोधार्थियों एवं शिक्षकों को भी उच्चस्तरीय अनुसंधान के लिए प्रेरित करेगी।

विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने भी डॉ. अमरजीत यादव एवं शोध छात्रा अंजली सिंह को शुभकामनाएँ देते हुए इस उपलब्धि को विश्वविद्यालय के लिए गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायक बताया है। इस सफलता से विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोध पहचान और अधिक सुदृढ़ होगी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ताओं की अनंतिम श्रेष्ठता सूची जारी की

10 जून, 2026। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, में 29 जून, 2026 को आयोजित होने वाले 10वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रथम प्रयास में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं की अनंतिम श्रेष्ठता सूची (Provisional Merit List) विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कर दी गई। यह सूची विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध करा दी गई।

कुलपति प्रो० कविता शाह ने इस अवसर पर कहा कि दीक्षांत समारोह किसी भी विश्वविद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण शैक्षणिक आयोजन होता है तथा स्वर्ण पदक प्राप्त करना विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन की सर्वोच्च उपलब्धियों में से एक है। यह सम्मान केवल मेधावी विद्यार्थियों की प्रतिभा का अभिनंदन नहीं, बल्कि अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत होता है। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से ग्रामीण अंचलों एवं दूरस्थ क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों द्वारा स्वर्ण पदक अर्जित करना उनकी लगन, परिश्रम एवं पारिवारिक संस्कारों का परिचायक है। ऐसे अवसर अभिभावकों के लिए भी अत्यंत गौरव एवं आत्मसंतोष का विषय होते हैं।

कुलपति ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि घोषित सूची में छात्राओं की उल्लेखनीय सफलता विश्वविद्यालय में महिला शिक्षा के बढ़ते प्रभाव, आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता को दर्शाती है। उन्होंने बताया कि प्रस्तावित 37 स्वर्ण पदकों हेतु जारी अनंतिम सूची में 28 छात्राएं एवं 9 छात्र सम्मिलित हैं, जो उच्च शिक्षा में छात्राओं की बढ़ती सहभागिता और उत्कृष्ट प्रदर्शन का प्रमाण है।

प्रो० कविता ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत लागू बहुविषयी एवं छात्र–केंद्रित शिक्षा व्यवस्था तथा सेमेस्टर प्रणाली विद्यार्थियों को निरंतर अध्ययन, कौशल विकास एवं समग्र मूल्यांकन का अवसर प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं, जिनका लाभ विद्यार्थियों को सीधे प्राप्त हो रहा है।

कुलपति ने विश्वास व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थी भविष्य में राष्ट्र निर्माण, अनुसंधान, नवाचार तथा समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने सभी चयनित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें यह गौरवशाली सम्मान विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल के कर–कमलों से प्राप्त होगा, जो उनके जीवन की अविस्मरणीय उपलब्धि होगी।

परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा जारी की गई यह सूची अनंतिम है। यदि किसी छात्र–छात्रा को सूची में उल्लिखित विवरण, प्राप्तांक अथवा श्रेष्ठता क्रम के संबंध में कोई आपत्ति हो तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार अपना प्रत्यावेदन 17 जून 2026 सायं 5.00 बजे तक ई–मेल convocation@suksn-edu-in पर प्रस्तुत कर सकता है। निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त प्रत्यावेदनों पर विचार किया जाना संभव नहीं होगा।



उन्होंने बताया कि प्राप्त प्रत्यावेदनों के परीक्षण के उपरांत अंतिम श्रेष्ठता सूची तैयार की जाएगी तथा उसी के आधार पर दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक प्रदान किए जाएंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने सभी संबंधित विद्यार्थियों से समयबद्ध रूप से सूची का अवलोकन करने एवं आवश्यक होने पर निर्धारित अवधि में अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अनुरोध किया है।

भारत–नेपाल के बीच डिजिटल कनेक्टिविटी का कुलपति द्वारा स्वागत

11 जून, 2026। भारत–नेपाल मैत्री एवं डिजिटल कनेक्टिविटी को सशक्त बनाने की दिशा में भारत सरकार द्वारा आरंभ की गई सीमा–पार डिजिटल भुगतान (Cross-Border Digital Payment) एवं

QR Code आधारित भुगतान व्यवस्था का स्वागत करते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० कविता शाह ने इस हेतु माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी का हार्दिक आभार व्यक्त किया।



उन्होंने कहा कि इस अभिनव पहल से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में अध्ययनरत नेपाल के विद्यार्थियों को शुल्क भुगतान, दैनिक आवश्यकताओं की खरीदारी तथा अन्य वित्तीय लेन–देन में अत्यंत सुविधा प्राप्त होगी। यह व्यवस्था न केवल डिजिटल इंडिया के संकल्प को साकार करती है, बल्कि भारत–नेपाल के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संबंधों को भी नई मजबूती प्रदान करती है।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय इस दूरदर्शी पहल का स्वागत करता है, जो सीमापार शिक्षा, युवा सशक्तीकरण एवं वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में जनकल्याण शिविर एवं स्वास्थ्य मेले से लोगों को मिला स्वास्थ्य–लाभ

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा भारत सरकार के नेतृत्व में विगत 12 वर्षों की विकास, सेवा, सुशासन एवं जनकल्याण की गौरवपूर्ण यात्रा पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रदेश–भर में विभिन्न जनहितकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के भैषज्यगुरु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में दिनांक 14 से 16 जून 2026 तक तीन दिवसीय जनकल्याण शिविर एवं स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया।



विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में आयोजित इस स्वास्थ्य मेले का उद्देश्य विश्वविद्यालय परिवार तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों को सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना रहा। स्वास्थ्य मेले में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा क्षेत्रीय ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में स्वास्थ्य–परीक्षण एवं चिकित्सकीय परामर्श का लाभ प्राप्त किया।

मेले में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बढ़नी की विशेषज्ञ चिकित्सकीय टीम द्वारा विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार सेवाएं प्रदान की गयीं। इस अवसर पर डॉ. सोनू चौधरी एवं डॉ. सना के नेतृत्व में स्वास्थ्य परीक्षण एवं परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराई गयीं। विश्वविद्यालय के चिकित्सक डॉ. अरुण द्विवेदी एवं डॉ. ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव ने भी स्वास्थ्य सेवाओं के समन्वय एवं चिकित्सा परामर्श में अपना सक्रिय योगदान दिया। अभय मिश्रा द्वारा चिकित्सकीय सहयोग प्रदान किया गया, जबकि ऋतिक शुक्ला (पैथोलॉजिस्ट) द्वारा रक्त एवं अन्य पैथोलॉजिकल जाँचें तथा फूलचंद चौधरी (ऑप्टोमेट्रिस्ट) द्वारा नेत्र परीक्षण एवं दृष्टि संबंधी जांचें की गयीं। तीन दिवसीय स्वास्थ्य मेले में नेत्र–परीक्षण, बी.एम.आई. परीक्षण, रक्त–परीक्षण, दंत–परीक्षण, स्त्री–रोग संबंधी जाँच एवं परामर्श, त्वचा–रोग परीक्षण, सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण तथा निःशुल्क दवा–वितरण की सुविधाएं उपलब्ध कराई गयीं। 16 जून को आयोजित रक्तदान शिविर के माध्यम से स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति



जनजागरूकता बढ़ाने का भी प्रयास किया गया।

स्वास्थ्य मानव जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण से अनेक गंभीर बीमारियों का प्रारंभिक अवस्था में ही पता चल जाता है, जिससे उनका प्रभावी उपचार संभव हो पाता है। इसी दृष्टि से यह स्वास्थ्य मेला न केवल उपचार उपलब्ध कराने का माध्यम रहा, बल्कि स्वास्थ्य जागरूकता एवं रोग–निवारण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण पहल बना।

कुलपति प्रो० कविता शाह के निर्देशन में सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने निकाली योग–जागरूकता यात्रा

20 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में कुलपति प्रो० कविता शाह के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में जन–जागरण योग–जागरूकता यात्रा का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों एवं विद्यार्थियों द्वारा निकाली गई यह यात्रा विश्वविद्यालय परिसर से प्रारम्भ होकर कपिलवस्तु तक पहुँची। यात्रा



का उद्देश्य आम जनमानस को योग के महत्व, उसके स्वास्थ्य लाभों तथा दैनिक जीवन में योग को अपनाने के प्रति जागरूक करना था।

इस अवसर पर योग आयोजन के समन्वयक प्रो० सत्येन्द्र कुमार दुबे ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि योग भारत की प्राचीन

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपरा की अमूल्य धरोहर है। योग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का आधार है। वर्तमान समय में स्वस्थ जीवनशैली के लिए योग को जन–जन तक पहुँचाना आवश्यक है। योग आत्मानुशासन, सकारात्मकता और संतुलित जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस भारतीय ज्ञान परंपरा के वैश्विक सम्मान का प्रतीक है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ० यशवंत यादव ने कहा कि योग केवल स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि एक जागरूक और सशक्त समाज के निर्माण का माध्यम भी है। युवाओं को योग से जोड़कर स्वस्थ एवं सकारात्मक राष्ट्र–निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा सकता है।

यात्रा के दौरान प्रतिभागियों ने योग अपनाने, स्वास्थ्य बढ़ाने तथा तनावमुक्त जीवन जीने का संदेश आम नागरिकों तक पहुँचाया। कार्यक्रम में योग के प्रति जन–जागरूकता बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया।

इस अवसर पर डॉ० विमल चन्द्र वर्मा, डॉ० जयसिंह यादव, डॉ० मयंक कुशवाहा, डॉ० दिनेश प्रसाद, डॉ० अविनाश प्रताप सिंह, डॉ० कपिल गुप्ता तथा डॉ० अब्दुल हफीज सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, कर्मचारीगण, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों एवं छात्र–छात्राओं ने सहभागिता की।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में भव्य योगाभ्यास कार्यक्रम संपन्न

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में भव्य योगाभ्यास कार्यक्रम उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके उपरांत आर्ट



ऑफ लिविंग की प्रशिक्षक प्रतिभा द्विवेदी एवं योग प्रशिक्षक अभिनव मालवीय के निर्देशन एवं देखरेख में जुम्बा, विभिन्न योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान का सामूहिक अभ्यास कराया गया। प्रतिभागियों ने सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, भुजंगासन, वज्रासन सहित विभिन्न योगासनों तथा अनुलोम–विलोम, कपालभाति एवं भ्रामरी प्राणायाम का अभ्यास किया। प्रशिक्षक अभिनव मालवीय द्वारा प्रतिभागियों को योगाभ्यास एवं प्राणायाम की विधियों का विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर पर्यावरण संरक्षण एवं स्वस्थ जीवन के संदेश के साथ पौधारोपण भी किया गया।

कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर कुलसचिव अश्वनी कुमार, परीक्षा नियंत्रक दीनानाथ यादव, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. नीता यादव, अधिष्ठाता वाणिज्य संकाय प्रो. सौरभ, अधिष्ठाता विज्ञान संकाय प्रो. प्रकृति राय, प्रो. हरीशकुमार शर्मा, प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव प्रो. जितेंद्र कुमार, प्रो. लक्ष्मण सिंह, प्रो. कौशलेंद्र चतुर्वेदी सहित विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों, कर्मचारियों एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने सामूहिक योगाभ्यास में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के स्वयंसेवकों की सक्रिय सहभागिता रही।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन को अनुशासित, सकारात्मक और संतुलित बनाने की एक समग्र जीवन–पद्धति है। योग व्यक्ति को आत्मिक शक्ति, मानसिक शांति एवं सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए योग एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के संवर्धन हेतु निरंतर प्रयासरत है तथा प्रत्येक व्यक्ति को नियमित योगाभ्यास को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए।



कार्यक्रम संयोजक प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे द्वारा विषय प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम समिति के सदस्य डॉ. यशवंत यादव द्वारा आभार ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम समिति के सदस्य एनसीसी अफसर डॉ. प्रवेश नाथ त्रिपाठी द्वारा गनवरिया स्थित कपिलवस्तु बौद्ध स्तूप परिसर में आयोजित योग कार्यक्रम का सफल संयोजन किया गया। उत्साह, अनुशासन एवं व्यापक जनसहभागिता के साथ आयोजित यह अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह विश्वविद्यालय परिवार के लिए अत्यंत प्रेरणादायी एवं स्मरणीय रहा।

साइबर अपराध जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

22 जून को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में साइबर अपराधों के प्रति जागरूक करने तथा डिजिटल सुरक्षा के उपायों से अवगत कराने के उद्देश्य से जनपदीय साइबर सेल सिद्धार्थनगर, साइबर क्राइम पुलिस थाना सिद्धार्थनगर एवं थाना कपिलवस्तु के साइबर सेल के संयुक्त तत्वावधान में साइबर अपराध रोकथाम एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ अश्वनी कुमार ने कहा कि कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (A. I.) के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराधों की प्रकृति भी तेजी से बदल रही है। तकनीक जहाँ शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रशासनिक कार्यों को अधिक प्रभावी बना रही

है, वहीं इसका दुरुपयोग कर साइबर अपराधी लोगों को ठगी और धोखाधड़ी का शिकार भी बना रहे हैं।

कार्यक्रम में क्षेत्राधिकारी (नगर) श्री विश्वजीत शौर्य ने साइबर अपराधों की प्रकृति, उनके विभिन्न प्रकार तथा उनसे बचाव के उपायों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि फिशिंग, ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी, पहचान की चोरी, सोशल मीडिया हैकिंग, साइबर बुलिंग, सेक्सटॉर्शन, रैनसमवेयर, फर्जी नौकरी एवं वर्क फ्रॉम होम घोटाले, निवेश धोखाधड़ी, आधार–मैच धोखाधड़ी, इंस्टेंट लोन ऐप फ्रॉड, गेमिंग फ्रॉड तथा डिजिटल अरेस्ट स्कैम जैसे अपराध वर्तमान समय में तेजी से बढ़ रहे हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित क्षेत्राधिकारी जनपदीय साइबर सेल सुश्री रोहिणी यादव ने सभी को डिजिटल प्लेटफॉर्म का सावधानीपूर्वक उपयोग करने, व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचने तथा किसी भी संदिग्ध ऑनलाइन गतिविधि की तत्काल सूचना संबंधित प्राधिकरण को देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता ही साइबर अपराधों से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है।



विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित जिला साइबर क्राइम सेल के सत्येंद्र मल ने साइबर अपराध की परिभाषा स्पष्ट करते हुए बताया कि कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट अथवा किसी भी डिजिटल नेटवर्क के माध्यम से किए जाने वाले अपराध साइबर अपराध की श्रेणी में आते हैं। उन्होंने ऑनलाइन ठगी, बैंकिंग धोखाधड़ी, फर्जी प्रोफाइल निर्माण एवं साइबर बुलिंग जैसे मामलों से सतर्क रहने की सलाह दी।

कार्यक्रम में उपस्थित जिला साइबर क्राइम सेल के हेड कांस्टेबल दिलीप कुमार द्विवेदी ने सोशल मीडिया सुरक्षा, मजबूत पासवर्ड के उपयोग, दो–स्तरीय प्रमाणीकरण (Two-Factor Authentication) तथा संदिग्ध लिंक एवं कॉल से बचाव के संबंध में उपयोगी सुझाव दिए गए। साथ ही साइबर अपराध की शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया तथा राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 एवं साइबर क्राइम पोर्टल के बारे में भी जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम में मुख्य नियंता प्रो दीपक बाबू, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो नीता यादव, अधिष्ठाता शैक्षणिक प्रो जितेंद्र कुमार, हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. सत्येंद्र कुमार दुबे, प्रो. लक्ष्मण सिंह, डॉ. आभा द्विवेदी, डॉ. विनीता रावत, डॉ. विशाल गुप्ता, डॉ. रक्षा, डॉ. किरन गुप्ता, डॉ रविकांत शुक्ला, डॉ. अमरजीत यादव, डॉ. हफीज. डॉ, अमित. डॉ. मनीषा सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा साइबर सुरक्षा से जुड़े विभिन्न प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में दीक्षांत उत्सव के उपलक्ष्य में प्रभातफेरी एवं योगाभ्यास का आयोजन

24 जून, 2026। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 29 जून, 2026 को आयोजित होने वाले दशम दीक्षांत समारोह के क्रम में राजभवन से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय परिसर में प्रतिदिन प्रातःकाल प्रभात फेरी एवं योगाभ्यास का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से विश्वविद्यालय के शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण ने उत्साहपूर्वक



सहभागिता की। प्रातःकाल परिसर स्थित दीक्षांत मंच पर योगाभ्यास के उपरांत प्रभातफेरी निकाली गयी। प्रभातफेरी के दौरान भारतीय परंपरा के मंगलगीतों का गायन एवं आध्यात्मिक वातावरण के सृजन का प्रयास किया गया, जिससे विश्वविद्यालय परिसर में सकारात्मक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण का संचार हो।

इस कार्यक्रम के संबंध में कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि प्रातःकाल विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सहभागिता से इस प्रकार का सकारात्मक वातावरण निर्मित होने से पूरे विश्वविद्यालय परिसर में शैक्षणिक एवं आध्यात्मिक चेतना का संचार होगा। उन्होंने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास, सांस्कृतिक चेतना एवं आध्यात्मिक उन्नयन का भी आधार है। दीक्षांत समारोह एक शैक्षणिक उत्सव है और इसके पूर्व आयोजित होने वाले ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा, अनुशासन, सांस्कृतिक चेतना तथा संस्थान के प्रति आत्मीयता का भाव विकसित करते हैं। उन्होंने कहा कि दीक्षांत समारोह किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए उत्सव का अवसर होता है और ऐसे अवसरों पर इस प्रकार के मूल्यपरक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम अत्यंत महत्त्वपूर्ण होते हैं।



कार्यक्रम–संयोजक एवं हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सत्येन्द्र कुमार दुबे ने बताया कि दीक्षांत समारोह तक प्रतिदिन प्रातःकाल परिसर में प्रभात फेरी, योगाभ्यास एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बताते हुए विश्वविद्यालय परिसर में निवासरत सभी शिक्षक परिवारों से भी प्रभातफेरी में सम्मिलित होने का आग्रह किया, जिससे परिसर का सकारात्मक, ऊर्जावान एवं रचनात्मक वातावरण और अधिक सुदृढ़ हो सके। उन्होंने कहा कि दीक्षांत समारोह की गरिमा एवं उपादेयता की दृष्टि से शैक्षणिक संस्थानों में इस प्रकार का आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक वातावरण अत्यंत मूल्यवान सिद्ध होता है।

दीक्षांत समारोह की तैयारियों की कुलपति ने की समीक्षा, सभी समितियों को दिए आवश्यक निर्देश

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में 29 जून को आयोजित होने वाले दशम दीक्षांत समारोह की तैयारियों की समीक्षा हेतु 25 जून को कुलपति प्रोफेसर कविता शाह की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में दीक्षांत समारोह से संबंधित विभिन्न समितियों के संयोजकों एवं सदस्यों के साथ कार्यक्रम की तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की गई तथा आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किए गए।

इस अवसर पर कुलपति ने विशेष रूप से इस वर्ष दीक्षांत समारोह के आयोजन स्थल को लेकर आवश्यक तैयारियों पर बल दिया। उन्होंने बताया कि प्रतिकूल मौसम एवं वर्षा की संभावनाओं को देखते हुए इस बार दीक्षांत समारोह का आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित पंडाल के स्थान पर गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह में किया जा रहा है। उन्होंने सभी समितियों को कार्यक्रम की गरिमा एवं सुव्यवस्थित संचालन सुनिश्चित करने के लिए समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए।



कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि शैक्षणिक उपलब्धियों और अकादमिक उत्कृष्टता का महोत्सव होता है। ऐसे महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता के लिए प्रत्येक छोटे–बड़े बिंदु पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हम सभी विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य इस गौरवशाली अवसर को सफल बनाने के लिए पूर्ण निष्ठा, समर्पण और जिम्मेदारी के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को भी विभिन्न जिम्मेदारियाँ सौंपी जा रही हैं तथा राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के वालंटियर भी समारोह के सफल संचालन हेतु विभिन्न मोर्चों पर तैनात रहेंगे। सभी को अपने–अपने दायित्वों का ईमानदारीपूर्वक निर्वहन करना होगा।

कुलपति ने कहा कि किसी भी बड़े आयोजन की सफलता का मूल मंत्र सामूहिक प्रयास, पारस्परिक सहयोग और समन्वित कार्यशैली में निहित होता है। यदि सभी समितियाँ निर्धारित समय–सीमा में अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगी, तो विश्वविद्यालय का दशम दीक्षांत समारोह एक ऐतिहासिक एवं यादगार आयोजन के रूप में स्थापित होगा।

बैठक में कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, विभिन्न समितियों के अध्यक्ष, शिक्षकगण, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

दशम दीक्षांत समारोह में पर्यावरण–संरक्षण का संदेश देंगे बर्डपुर उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चे

26 जून, 2026। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 29 जून को आयोजित होने वाले दशम दीक्षांत समारोह की तैयारियों के क्रम में बर्डपुर उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को पर्यावरण संरक्षण विषयक विशेष कार्यक्रमों के लिए प्रशिक्षित किया गया। राजभवन से प्राप्त कार्यक्रम की रूपरेखा में उल्लिखित है कि प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के माध्यम से पर्यावरण–संरक्षण पर केंद्रित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिसमें कहानी, भाषण, सामूहिक नृत्य तथा जल संरक्षण एवं जल संचय के प्रति जागरूकता के लिए जल भराव कार्यक्रम शामिल हों।



इसी क्रम में आज बर्डपुर उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के बीच पर्यावरण संरक्षण विषयक कार्यक्रमों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। आगामी दशम दीक्षांत समारोह में बर्डपुर उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर आधारित कहानी, भाषण, सामूहिक नृत्य तथा जल संरक्षण एवं जल संचय से संबंधित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। कार्यक्रम का प्रशिक्षण प्रो. कौशलेंद्र चतुर्वेदी एवं डॉ. यशवंत यादव के निर्देशन में संपन्न हुआ।

यह संपूर्ण कार्यक्रम कुलपति प्रोफेसर कविता शाह के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी है। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छोटे–छोटे प्रयासों के माध्यम से भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है और बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित कर एक बेहतर और सुरक्षित भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

कुलपति ने कहा कि माननीय कुलाधिपति महोदय द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति निरंतर प्रेरणा प्रदान की जाती रही है तथा विशेष रूप से छोटे बच्चों के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने पर बल दिया गया है। इसी भावना के अनुरूप सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के दशम दीक्षांत समारोह में बर्डपुर उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर आधारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे, जिनके माध्यम से समाज को प्रकृति–संरक्षण, जल–संरक्षण और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का संदेश दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि बच्चों के माध्यम से दिया गया संदेश अत्यंत प्रभावी, प्रेरणादायी और दूरगामी होता है। बाल मन की सरलता और निष्कपट अभिव्यक्ति समाज को सकारात्मक दिशा देने की क्षमता रखती है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं पर्यावरणीय दायित्वों के प्रति जन–जागरण करना भी है।

दीक्षांत समारोह का पूर्वाभ्यास

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में आगामी 29 जून को आयोजित होने वाले दशम दीक्षांत समारोह की तैयारियों के क्रम में 26 जून को कुलपति प्रो. कविता शाह के निर्देशन एवं जन भवन से आई टीम की उपस्थिति में दीक्षांत समारोह के समस्त कार्यक्रमों का व्यापक पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) आयोजित किया गया।

जन भवन से प्राप्त निर्देशों के अनुसार दीक्षांत समारोह को पूर्णतः व्यवस्थित, गरिमामय एवं समयबद्ध ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से विद्वत पदयात्रा, शैक्षणिक शोभायात्रा, पुरस्कार एवं उपाधि वितरण सहित समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों का विस्तृत रिहर्सल किया गया। इस दौरान कार्यक्रम की प्रत्येक गतिविधि की बारीकी से समीक्षा की गई तथा संबंधित अधिकारियों एवं समितियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए गए।

पूर्व–अभ्यास के संबंध में कुलपति प्रो. कविता शाह ने बताया कि दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गौरवपूर्ण आयोजन होता है। ऐसे कार्यक्रमों का प्रत्येक क्षण पूर्व निर्धारित समय–सारिणी के अनुसार संचालित किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए पूर्वाभ्यास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है और निरंतर अभ्यास से ही कार्यक्रम व्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक संपन्न हो पाते हैं।



कुलपति ने बताया कि जनभवन से भी कार्यक्रम को व्यवस्थित एवं गरिमापूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए एक टीम आज विश्वविद्यालय पहुँची है। उसी टीम की उपस्थिति में दीक्षांत समारोह के सभी कार्यक्रमों का पूर्वाभ्यास एवं तैयारियों का परीक्षण किया जा रहा है, ताकि समारोह के आयोजन में किसी प्रकार की कठिनाई न आए और संपूर्ण कार्यक्रम निर्धारित समयानुसार संपन्न हो सके।

कुलपति ने यह भी बताया कि इस बार दीक्षांत समारोह के



आयोजन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है। पूर्व वर्षों में स्वर्ण पदक एवं पीएच.डी. उपाधिधारकों के अतिरिक्त अन्य सभी विद्यार्थियों को मंच से कुलसचिव द्वारा प्रस्तुत किया जाता था, किन्तु इस वर्ष अपने–अपने संकाय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संबंधित संकायाध्यक्ष मंच से प्रस्तुत करेंगे। इससे विद्यार्थियों और संकायों की सहभागिता एवं गरिमा में और वृद्धि होगी।

इस अवसर पर जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, तीनों संकायों के संकायाध्यक्ष, परीक्षा नियंत्रक डॉ. दीनानाथ यादव, सभी विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु डिजिटल रीडिंग मशीन एवं 'किलकारी' बाल–देखभाल केंद्र का होगा लोकार्पण

27 जून, 2026। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 29 जून, 2026 को आयोजित होने वाले दशम दीक्षांत समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल द्वारा विश्वविद्यालय में नवस्थापित केंद्रीय डिजिटल लाइब्रेरी में दिव्यांग विद्यार्थियों की सुविधा हेतु स्थापित डिजिटल रीडिंग मशीन तथा किलकारी बाल देखभाल केंद्र का लोकार्पण किया जाएगा।

इस संबंध में पुस्तकालय प्रभारी डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि विश्वविद्यालय का केंद्रीय पुस्तकालय पूर्णतः डिजिटल स्वरूप में विकसित किया गया है। इसमें दिव्यांग विद्यार्थियों के पठन–पाठन को सुगम बनाने के लिए कीबो सॉफ्टवेयर एवं अत्याधुनिक स्कैनिंग मशीन की व्यवस्था की गई है। इस मशीन के माध्यम से किसी भी पुस्तक को स्कैन कर उसका 100 से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है। अनूदित सामग्री को वॉइस सुविधा के माध्यम से सुना भी जा सकता है, जो विशेष रूप से दृष्टिबाधित दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

उन्होंने बताया कि कमजोर दृष्टि वाले विद्यार्थी इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से पाठ को बड़े अक्षरों में देखकर अध्ययन कर सकेंगे। साथ ही विद्यार्थी अपने मोबाइल फोन पर भी सामग्री डाउनलोड कर कहीं से भी इस सुविधा का लाभ उठा सकेंगे।

इसी अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में नवस्थापित किलकारी बाल–देखभाल केंद्र (डे–केयर सेंटर) का भी लोकार्पण किया जाएगा। इस केंद्र में विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं अधिकारियों के छोटे बच्चों के लिए सुरक्षित, सुविधायुक्त एवं अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया गया है। केंद्र में बच्चों के देखभाल के लिए केयरटेकर रखे जाएंगे तथा बच्चों के आराम, खेलने, सीखने एवं देखभाल की समुचित व्यवस्था की गई है।



इसके अतिरिक्त, किलकारी बाल देखभाल केंद्र में बच्चों के मनोरंजन एवं शारीरिक विकास के लिए कलरव बाल उपवन की भी स्थापना की गई है, जिसमें बच्चों के खेलने हेतु विभिन्न उपकरण लगाए गए हैं। इस सुविधा से विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी अपने बच्चों की सुरक्षा और देखभाल को लेकर निश्चिंत रहकर अपने शैक्षणिक एवं प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन कर सकेंगे।

दशम दीक्षांत समारोह की तैयारियों के क्रम में आज विश्वविद्यालय में कार्यक्रम का पूर्ण एवं व्यवस्थित पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) भी किया गया। इस वर्ष समारोह स्थल में परिवर्तन किए जाने के कारण पूर्वाभ्यास विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। पूर्वाभ्यास के दौरान मंच संचालन, अतिथियों के आगमन, पदक एवं उपाधि वितरण,



सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा समस्त व्यवस्थाओं का क्रमबद्ध अभ्यास किया गया, जिससे समारोह का सफल एवं गरिमामय आयोजन सुनिश्चित किया जा सके।

सम्पादकीय

दीक्षान्त समारोह का अर्थ है– अन्तिम दीक्षा से सम्बन्धित समारोह। विद्यार्थी अनेक वर्षो तक विद्या ग्रहण करते हैं या शोध करते हैं। अपनी शिक्षा या शोध का फल उपाधि के रूप में प्राप्त करने के उपरान्त जब वे कर्म–क्षेत्र में उतरने की तैयारी कर रहे होते हैं तो उन्हें विदाई के समय विश्वविद्यालय से अन्तिम दीक्षा प्रदान की जाती है। यह एक तरह से नैतिक उपदेश होता है, जीवन की शिक्षा होती है, समाज–हित के लिये प्रतिबद्धता होती है, जिसके अनुपालन के लिये उनसे प्रतिज्ञा भी करायी जाती है। इसीलिये समारोह में उपाधि प्राप्त करने के लिये उपस्थित अध्येताओं को उपाधि प्रदान करने से पहले कुलपति द्वारा दीक्षोपदेश दिये जाने की प्रथा है। यह एक प्रकार से उस संस्थान की ओर से विद्यार्थियों–शोधार्थियों को अन्तिम शिक्षा होती है। वर्षो–वर्ष शिक्षक तो पढ़ाते–सिखाते ही हैं। संस्थान से अपनी शिक्षा पूर्ण कर लेने के बाद विदाई के समय संस्थान के मुखिया कुलपति द्वारा जो सन्देश–उपदेश दिया जाता है, वही अन्तिम दीक्षा संस्थान की तरफ से उपाधि प्राप्तकर्ताओं के लिये होती है। इस समय जो प्रतिज्ञा उनसे करायी जाती है, उसमें सबसे पहला उपदेश यही दिया जाता है कि 'सत्यं वद, धर्मं चर।' अर्थात् सत्य बोलो और धर्म के पथ पर चलो। यों, सत्य बोलना भी धर्म की ही परिधि के भीतर आता है। तुलसीदास तो यहाँ तक कहते हैं कि 'धर्म न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।' अर्थात् आगमों में, निगमों में, पुराणों में सर्वत्र यह कहा गया है कि सत्य बोलने के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। तो फिर यह धर्म क्या है, जिसके पथ पर चलने के लिये उपाधि प्राप्तकर्ताओं से प्रतिज्ञा करायी जाती है?

भारतीय संविधान तो 'सेक्युलर' है। सेक्युलर का अनुवाद अधिकतर लोगों के बीच 'धर्मनिरपेक्ष' प्रचलित है। ऐसे में विद्यार्थी के मन में यह भाव आ सकता है कि कहाँ तो हमारा 'धर्मनिरपेक्ष' संविधान और कहाँ 'धर्मपथ' पर चलने की प्रतिज्ञा! दोनों कैसे निभेंगे? यह असल में है धर्म के सही अर्थ और स्वरूप को न जानने के कारण। 'सेक्युलर' शब्द का 'धर्मनिरपेक्ष' अर्थ 'रिलीजन' को 'धर्म' के रूप में स्वीकार कर लेने के कारण है। भारतीय परिप्रेक्ष्य से धर्म एक बहुत व्यापक तथा उदार अवधारणा है। इसलिये रिलीजन में इसका अर्थ नहीं अँटता। रिलीजन तो इसमें समा सकता है, पर यह रिलीजन की परिधि से बहुत ऊपर है। रिलीजन को हद–से–हद पन्थ या सम्प्रदाय माना जा सकता है, पर धर्म उससे कहीं बहुत आगे की चीज है। भारत में धर्म मात्र पूजा–पाठ की रीति से जुड़ा हुआ नहीं है। यह एक बहुत व्यापक अवधारणा है जिसका सम्बन्ध मुख्यतः कर्तव्यबोध और मानवीय सद्गुणों से है। भारत में धर्म की जितनी भी परिभाषाएं मिलती हैं या कहें तो धर्म से सम्बन्धित जो भी विचार मिलते हैं उनमें पूजा–पाठ का नहीं, कर्तव्य–निर्वाह का सन्देश समाहित है। महाभारत में कहा गया है–

'श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

अर्थात् धर्म का सार सुनो और सुनकर हृदय में धारण करो। अपने को जो प्रतिकूल लगे, वह दूसरों के साथ मत करो।

तुलसीदास तो साफ–साफ कहते ही हैं कि परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है और परपीड़न से बड़ा कोई अधर्म नहीं है–

परहित सरिस धरम नहिं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

'मनुस्मृति' में भी धर्म के जो दस लक्षण धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय–निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध बताये गये हैं, उनका सम्बन्ध भी उपासना–पद्धति से नहीं है, अपितु मानवीय सद्गुणों से ही है–

धृतिःक्षमादमोअस्तेयशौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्यासत्यंअक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

अब बताइए भला इस तरह की परिभाषा वाले धर्म से निरपेक्ष होकर कोई क्या प्राप्त कर सकता है? ऐसा धर्म जो मानवता के विकास और बचाव के लिये परम आवश्यक है, उससे निरपेक्ष होकर मानवता का क्या भला हो सकता है? इसलिये सेक्युलर का अर्थ पन्थनिरपेक्ष और सम्प्रदाय–निरपेक्ष तो चल सकता है, पर धर्मनिरपेक्ष नहीं। भारतीय समाज वास्तव में धर्मनिरपेक्ष नहीं, धर्म–सापेक्ष है। धर्म–सापेक्ष होने का मतलब है अपने धर्म के प्रति आस्था रखना और दूसरों के धर्म का सम्मान करना। इस तरह सभी धर्मों के प्रति सकारात्मकता का भाव रखना ही धर्म–सापेक्षता है, जो कि भारतीय समाज की प्रवृत्ति रही है। धर्मनिरपेक्ष होने का मतलब हुआ उन मूल्यों से अपने को काट लेना जो कि मानवीय कहलाते हैं, क्योंकि वास्तविक अर्थ में धर्म हमारे मानवीय मूल्य ही हैं। इसीलिये हमारे यहाँ 'अधम' शब्द जो कि 'अधर्म' का ही अपभ्रंश रूप है, बहुत निम्नस्तरीय कार्य करने वालों के लिये प्रयुक्त होता है। इसका अर्थ पापी होता है, जिसे कोई अपने लिये नहीं कहलवाना चाहता। धर्मनिरपेक्ष से धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति के लिये भी 'अधर्मी', 'अधमी' या 'अधम' कहना एक गाली ही है। इसलिये 'धर्मनिरपेक्ष' कहलाने में भले कोई गौरव का अनुभव कर ले, पर 'अधर्मी' कहते ही लड़ने को तैयार हो जायेगा। ।

भारतीय आचार्यो ने जीवन के चार पुरुषार्थ निर्धारित किये हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारो पुरुषार्थो में भी धर्म सबसे पहले आता है। क्यों? इसलिये कि हम अर्थ और काम को साधते हुए भी सदैव धर्म को ध्यान में रखें। हमारे द्वारा न अर्थ–सम्बन्धी और न काम–सम्बन्धी कोई भी कार्य ऐसा हो पाये जो धर्मानुकूल न हो। कारण क्या है? कारण है यह कि धर्म हैं हमारे करणीय कर्म और अधर्म हैं अकरणीय कर्म। मतलब कि जो हमको मनुष्य होने के नाते करने चाहिए, वे हमारे कर्तव्य–कर्म ही धर्म हैं और जो नहीं करने योग्य हैं, वे अधर्म हैं। जिस अर्थ में हम धर्म शब्द का प्रयोग सामान्यतः करते हैं, उसका भी धर्म से सम्बन्ध इसलिये है कि उसमें हमें कर्तव्य–बोध और मूल्य–बोध कराया जाता है। इस दृष्टि से अगर हमारा हर कार्य धर्मानुकूल होगा तो अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष तक पहुँचना सहज हो जायेगा। इसलिये धर्म सबसे पहला पुरुषार्थ बताया गया है। जीवन के प्रत्येक पग पर करणीय–अकरणीय कर्म का ध्यान रहे, इसलिये धर्म को सबसे ऊपर रखा गया है। हमारा कोई भी कर्म धर्म के प्रतिकूल न हो, यह ध्यान में रखते हुए धर्म को सबसे आगे रखा गया है।

आज हमारी समस्या यह है कि हम धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूलते जा रहे हैं, इसी कारण उससे विमुख से भी होते जा रहे हैं। धर्म हमारे लिये पूजा–पद्धति तक सीमित होकर रह गया है। इसलिये सदसद् कार्य करने के पश्चात् थोड़ी देर अपने इष्ट के सामने बैठकर मान लेते हैं कि हमने धर्मपालन कर लिया और अब हमारे सब पाप धुल गये। धर्म को धारण करने वाला कहा गया है। हम यदि धर्म को धारण करेंगे तो धर्म मानवता को धारण करेगा, मानव को धारण करेगा। मतलब कि यह कुछ पलों या क्षणों का मामला नहीं है, सतत साथ चलने वाला हमारा उपकारक है। हर परिस्थिति में यदि धर्म हमारे साथ रहेगा तो हम कुछ भी गलत करेंगे ही नहीं। इसीलिये धर्मपथ पर चलने की दीक्षा सर्वप्रथम दीक्षान्त समारोह में दी जाती है। यह एक शाब्दिक प्रतिज्ञा भर नहीं होनी चाहिए, प्रतिज्ञाधारी का दृढ़ संकल्प बनना चाहिए। इसी में उसका कल्याण है, उससे जुड़े लोगों का कल्याण है, समाज और राष्ट्र का कल्याण है, अखिल मानवता का कल्याण है।

'कैम्पस कनेक्ट' का यह 12वाँ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है। माननीया कुलपति जी ने जो दायित्व हमें विगत वर्ष सौंपा था, उसको हम ठीक से निभा पाये हैं, इस बात का संतोष है। एक वर्ष की यह सफल यात्रा हमारा उत्साह बढ़ा रही है। आप सबका अधिकाधिक जुड़ाव इस उत्साह को द्विगुणित करेगा।

इस रचनात्मक यात्रा के एक वर्ष पूर्ण कर लेने के अवसर पर मैं सर्वप्रथम आभार प्रकट करता हूँ विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. कविता शाह जी का कि विश्वासपूर्वक यह दायित्व उन्होंने हमें सौंपा और हम उनके विश्वास की रक्षा करते हुए इस दायित्व को निभा पाये हैं तो इसके लिये बहुत धन्यवाद सह–सम्पादक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह तथा सम्पादक–मण्डल के सदस्यों– डॉ. शिवम शुक्ला, डॉ. रेनू त्रिपाठी और डॉ. सत्यम मिश्र को कि जिनके सहयोग के बिना यह यात्रा इतनी सुगम और सफल नहीं हो सकती थी। परामर्श–मण्डल के सभी सम्मानित सदस्यों के साथ ही उन सभी सहयोगकर्ताओं के प्रति बहुशः आभार, जिनके रचनात्मक सहयोग से हम कदम–दर–कदम आगे बढ़ पाये हैं। जय भारत, जय भारती!

गौ–पूजन का वैज्ञानिक आधार

–के. वी. सिंह

ओऽम् यदि सनातन धर्म की आत्मा है तो गौ उसके प्राण। भारत में गौमाता की पूजा सदा से होती आई है। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार गौ भारत की ही नहीं, अपितु विश्वमाता है। इसका उल्लेख हमारे वेद–पुराणों, गीता–रामायण आदि सभी धर्मग्रंथों में मिलता है। वेदों का मानना है कि विश्व के जड़–चेतन सभी प्राणियों में कोई–न–कोई देवता वास करते हैं। परंतु गौमाता के शरीर में तो सभी देव–तत्त्व विद्यमान हैं। इसी कारण गाय को सर्वदेवमयी एवं विश्वरूपा कहा गया है। हिंदू धर्म शास्त्रों का शायद ही कोई ऐसा ग्रंथ होगा, जिसमें गौमाता की महिमा का वर्णन न किया गया हो। पुराणों में कामधेनु, नंदिनी, सुरभि, सुभद्रा, सुशीला, बहुला आदि देविक गायों का उल्लेख मिलता है। गाय का दूध सात्त्विक गुणों को जाग्रत् करता है। देवताओं को इसके दूध का अभिषेक व इससे बने पदार्थ अत्यंत प्रिय हैं। गाय आर्यों की परम प्रिय थी, जिसका दूध वे प्रतिदिन सेवन करते थे और आपस में एकता व प्रेम से रहते थे। इसके विपरीत राक्षसों की संस्कृति में भैंस को प्रधानता दी जाती थी।

गाय से प्राप्त दूध, दही, घी, गोबर और गौमूत्र– ये सभी पदार्थ पवित्र हैं। इन पाँचों पदार्थों को मिलाकर 'पंचगव्य' बनाते हैं। पंचगव्य पापों का नाश करनेवाला व शुद्ध करनेवाला माना जाता है। शिव प्रिय बिल्व वृक्ष गऊमाता के गोबर से उपजा है। इस वृक्ष में माँ भगवती लक्ष्मी का निवास है। इसलिए इसे 'श्रीवृक्ष' भी कहते हैं। नीलकमल तथा रक्तकमल फूलों के बीज भी गौ के गोबर से ही उत्पन्न हुए हैं। गौमाता के मस्तक से उत्पन्न पवित्र गोरोचन सिद्धिदायक है। गुग्गल नाम का सुगंधित पदार्थ गोमूत्र से पैदा होता है। गुग्गल देवप्रिय आहार है, इसलिए हवन करते समय इसकी आहुति दी जाती है। यह आहुति देवताओं को प्रसन्न करती है और मनुष्य का कल्याण भी करती है।

गाय से संबंधित ये सभी मान्यताएँ कोई ढकोसला नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे गूढ़ वैज्ञानिक आधार है। प्रकृति ने गाय के शरीर को ऐसा बनाया है कि उसके शरीर से उत्पन्न हर पदार्थ अपने में विशिष्ट गुण रखता है, जो मनुष्य के लिए हितकर है। प्रकृति गाय के शरीर में ये विशिष्टताएँ दो कारणों से पैदा करती है। एक तो यह कि गाय के शरीर की जो चर्म है, वह सूर्यकिरणों से विशेष शक्ति और ऊर्जा ग्रहण करने की क्षमता रखती है, जिसके कारण गाय से पैदा होनेवाले सभी पदार्थ विशेष गुणकारी होते हैं। दूसरी विशिष्टता यह है कि गाय की शारीरिक आंतरिक बनावट इस प्रकार है कि उसके शरीर से पैदा हुए पदार्थ विशेष होते हैं।

प्राचीन काल में जब हमारे देश के गाँवों में किसी कारण महामारी, प्लेग आदि फैलता था, तब हमारे पूर्वज गाय के गोबर से घरों की दीवारों पर चार अंगुल चौड़ी रेखा घर के चारों तरफ लिपवा देते थे, जिससे रोग के कीटाणु घर में प्रवेश नहीं कर पाते थे। गोमूत्र अनेक रोगों का नाश करता है। इसमें कैंसर जैसे रोगों को भी नियंत्रित करने की क्षमता है।

गाय के दूध को आयुर्वेद में अमृत कहा गया है। आज वैज्ञानिकों ने भी यह सिद्ध कर दिया है कि गौमाता के चर्म में वह आकर्षण शक्ति है, जो सूर्य की किरणों से एक प्रकार का स्वर्णिम तत्त्व आकृष्ट करके अपने दूध में समाविष्ट कर लेती है। इसी कारण गाय के दूध और घी में कुछ पीलापान झलकता है। सूर्य से प्राप्त यही पीलापन मनुष्य के लिए बहुत लाभदायक है, जो हमारी आंतरिक शक्ति को बढ़ाता है।

वैज्ञानिक भाषा में गाय के घी–दूध का यह पीलापन लैक्टोज (स्बजवेम) कहलाता है। इस कारण गाय का दूध माँ के दूध से मिलता–जुलता है, क्योंकि माँ के दूध में सबसे अधिक लैक्टोज होता है। इसके बाद लैक्टोज गाय के दूध में पाया जाता है। गाय के दूध का यह गुण बच्चों का लगभग माँ के दूध जैसा ही पोषण करता है।

यदि हम अन्य दुधारू पशुओं, जैसे भैंस, बकरी, ऊँट, याक आदि को जंगल में बेरोक–टोक चरने के लिए गाय के साथ छोड़ दें तो देखेंगे कि गाय जो वनस्पति खाती है, वह दूसरे पशुओं की अपेक्षा अलग होती है, जो उसके दूध को मनुष्य के लिए अधिक गुणकारी व पौष्टिक बना देती है। भैंसें घास तथा बकरी व ऊँट काँटेदार वनस्पति अधिक पसंद करते हैं जबकि गाय घास के साथ कुछ विशेष पौधे भी चरती है, जो उसके दूध को विशिष्ट बनाते हैं।

एक और तथ्य ध्यान देने योग्य यह है कि गाय के दूध में गाय के अपने चर्म का रंग भी महत्त्वपूर्ण है। वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा अब यह प्रमाणित हो चुका है कि लाल रंग और काले रंग की गायों का दूध सफेद रंग की गाय से गुणधर्म में अलग है। इस कारण उनके दूध की प्रभाव शक्ति भी भिन्न होती है। इस गुण–धर्म की भिन्नता का वैज्ञानिक कारण यह है कि लाल और काली गायें अपने चर्म के रंगों के कारण सूर्य की शक्ति को भिन्न–भिन्न मात्रा व ढँग से अपने शरीर में ग्रहण करती हैं, जिसके कारण उनका दूध गुणवत्ता में अलग होता है। कर्मकांड में अलग–अलग प्रकार के गुणधर्मवाले दूध की आवश्यकता होती है। इसीलिए ब्राह्मण पूजा में आपसे काली या लाल गाय का दूध लाने को कहते हैं।

आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि गाय के विषय में जो तथ्य बताए गए हैं, वे सब भारत की देशी गाय के विषय में हैं। विदेशी 'जर्सी' गाय के दूध में ये सब गुण पूर्णरूप से विद्यमान नहीं होते। इसका वैज्ञानिक आधार यह है कि 'जर्सी' गाय की 'जेनेटिक म्यूटेशन' (Genetic mutation) देशी गाय से भिन्न होती है। प्राचीन काल में देशी गाय की भी कई प्रजातियाँ थीं, पर उन सबका दूध–दही गुण–धर्म में एक समान था।

अमेरिका ने कानपुर की एक फर्म को 'गौमूत्र' का पेटेंट दिया है और यह स्वीकार किया गया है कि गौमूत्र में कई बीमारियों की रोकथाम और ठीक करने की क्षमता है।

रूस के वैज्ञानिकों, विशेषकर डॉ. शीरोविक के अनुसार गाय के गोबर से लीपे गए घरों पर परमाणु रेडिएशन का प्रभाव नहीं पड़ता। यही नहीं, गाय के घी की अग्नि में आहुति देने से जो धुआँ उठता है, वह परमाणु रेडिएशन को काफी हद तक कम करता है।

खेद है, आज भारत में उसी पूजनीय गाय की दुर्दशा है, वह सड़क पर गंदी चीजें व प्लास्टिक की थैलियाँ खाती है। ऐसी स्थिति में गाय के द्वारा दिया दूध–दही हमें पहले जैसा पौष्टिक व नीरोग कैसे बना सकता है? यदि ऐसे दूध के कारण आज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखनेवाला आधुनिक मानव गाय के विषय में किए गए गुणगान को ढकोसला या अंधविश्वास कहे तो आश्चर्य कैसा?

(ग्रन्थ अकादमी, नयी दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'हिंदू धर्म में वैज्ञानिक मान्यताएँ' से साभार)

बौद्ध–साहित्य

–आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

वैदिक साहित्य की भाँति बौद्ध साहित्य भारतवर्ष के प्रागैतिहासिक युग से संबद्ध नहीं है। इस साहित्य का निर्माण जिन दिनों हुआ था, उस काल को निस्संदिग्ध रूप से पंडितों ने ऐतिहासिक युग माना है। बुद्धदेव की मृत्यु ई. पू. पाँचवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई थी। लगभग पचास वर्षों तक वे धर्म–प्रचार करते रहे। इस प्रकार उनके धर्म–प्रचार का समय निश्चित रूप से ई. पू. की पाँचवीं शताब्दी का मध्य भाग है। एक श्रेणी के बौद्ध लोगों का विश्वास है कि लंका, स्याम, ब्रह्मा आदि देशों में प्रचलित और पाली भाषा में लिखित जो बौद्ध ग्रंथ मिले हैं, उनमें के प्रधान–प्रधान बुद्धदेव के श्रीमुख से उच्चरित हुए थे। यदि यह विश्वसनीय हो, तो पाली साहित्य के मुख्य भाग का काल आसानी से ई. पू. पाँचवीं शताब्दी में मान ले सकते हैं; लेकिन स्वयं बौद्ध ग्रंथों में ऐसी बातें हैं, जो ऐसा विश्वास होने देने में बाधक हैं। इतना तो ग्रंथों में स्पष्ट ही है कि बुद्धदेव ने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा। पाली–साहित्य (वस्तुतः 'पाली साहित्य') में जो कुछ है, वह बुद्धदेव के बचनों का संग्रह या उसकी व्याख्या है। ग्रंथों से पता चलता है कि ये संग्रह समय–समय पर आहूत बौद्ध संगीतियों या सम्मेलनों में बड़े–बड़े आचार्यों के निर्णयानुसार संगृहीत हुए थे। पाली–ग्रंथों में कुल मिलाकर ऐसी नौ संगीतियों का उल्लेख है। इनमें से जिन कई मुख्य संगीतियों का आलोच्य विषय के साथ बहुत अधिक संबंध है, उन्हीं की चर्चा यहाँ की जाएगी।

प्रथम संगीति बुद्धदेव के महानिर्वाण के कुछ ही दिनों बाद राजगह (राजगृह) में स्थविर महाकाश्यप के उद्योग से हुई थी।

उसका उद्देश्य धर्म और विनय का संस्थापन था। इस संगीति का सबसे प्राचीन विवरण चुल्लवग्ग में पाया जाता है। चुल्लवग्ग स्वयं ही विनय पिटक का एक अंग है, इसलिए इतना तो निर्विवाद है ही कि विनय पिटक संपूर्णतः इस संगीति की पूर्ववर्ती बातों का ही संग्रह नहीं है। जिस बात में सबसे कम आपत्ति की गुंजाइश है, वह यह कि धम्म और विनय पिटक के प्राचीनतम भाग इसी संगीति में निर्धारित हुए होंगे और यदि बुद्धदेव ने सचमुच पाली भाषा में ही उपदेश दिया था (जिसमें बहुत–से पडित अब संदेह करने लगे हैं) तो मानना पड़ेगा कि हमारे पास बहुत कुछ बुद्धदेव के ज्यों–के–त्यों कहे हुए वचन भी प्राप्त हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण संगीति बुद्ध–निर्वाण के सौ वर्ष बाद वेसाली (वैशाली) में हई थी। इसका भी सबसे प्राचीन विवरण चुल्लवग्ग में ही मिलता है; पर इसमें यह नहीं लिखा है कि यह संगीति बुद्ध–निर्वाण के सौ वर्ष के बाद हुई थी। बाद के ग्रंथों (दीपवंश और महावंश) के अनुसार इस संगीति का उक्त समय बताया गया है। प्रथम संगीति में धम्म और विनय का संकलन हुआ, पर इसमें छोटे–छोटे नियमों का। कहते हैं कि वैशाली के भिक्षुओं ने इस प्राचीन नियमों का अपव्यवहार किया था, उसी के संशोधन में इस संगीति को अधिक समय लगा। दीपवंश और महावंश के अनुसार यह संगीति आठ महीने तक चलती रही। ऊपर उल्लिखित दस नियमों के अतिरिक्त धर्म और विनय की आवृत्ति भी इस संगीति में हुई थी। पंडितों का अनुमान है कि इस समय तक निश्चित रूप से विनय और धम्म पिटक का कोई–न–कोई आकार रहा होगा, क्योंकि दस नियमों के विचारार्थ विनय और धम्म के पूर्व निर्णीत नियमों की जरूरत रही होगी और यह जरूरत किसी नियम–संग्रह से ही पूरी की गई होगी। उदाहरणार्थ, वैशाली के भिक्षुओं ने नियम किया था कि जहाँ नमक का अभाव होने की संभावना है, वहाँ उसे भी भिक्षु लोग सींगों में भरकर ले जा सकते हैं। अब इस बात के औचित्य के निर्णय के लिए किसी पूर्व निर्णीत विधि–निषेध की आवश्यकता होनी चाहिए (श्रावस्ती में कथित सुत्तविभंग के अनुसार यह बात नियम–विरुद्ध है)। बुद्धदेव ने सारिपुत्त को ऐसा करने से मना किया था। इस प्रकार उस समय तक कुछ ग्रंथ (भले ही वे मौखिक हों) जरूर बन चुके थे। तीसरी संगीति, जो वृजिपुत्त भिक्षुओं के उद्योग से आहुत हुई थी, हमारे विषय से उतनी संबद्ध नहीं है। सबसे महत्त्वपूर्ण संगीति चौथी है, जिसे अशोक संगीति भी कहते हैं। लंका में प्राप्त परंपरा के अनुसार यही तीसरी संगीति है। कहा गया है कि जब अशोक ने बौद्ध धर्म पर अपनी आस्था प्रकट की तो बहुत–से अन्य संप्रदाय के लोग भी बौद्ध–संघ में आ घुसे और अपना–अपना राग अलापने लगे। तंग आकर सम्राट ने तिस्स मोग्गलिपुत्त को बुलवाया, जिन्होंने सम्राट को वास्तविक रहस्य समझाया। तब राजा ने एक–एक बौद्ध भिक्षु को बुलाकर उसके मत के विषय में पूछा। कहा गया है कि जो लोग विभाज्यवादी (विभज्जवादी) थे, उन्हीं को तिस्स ने असली बौद्ध माना और बाकी को श्वेत वस्त्र पहनवाकर निकाल बाहर किया। इन्हीं तिस्स (तिष्य) ने चुने हुए एक हजार भिक्षुओं की सभा बुलाई, जो नौ महीने की निरंतर आलोचना के बाद तीन पिटकों या पिटारों का संग्रह करने में समर्थ हुई। ये तीन पिटक हैं– विनय पिटक, सुत्तपिटक और अधिधम्म पिटक। संक्षेप में इन्हें त्रिपिटक कहते हैं। अंतिम पिटक का एक–एक अंग कथावत्थु तिष्य का रचित बताया जाता है। लक्ष्य करने की बात यह है कि स्थविरवादियों के संप्रदाय को छोड़कर और किसी संप्रदाय के ग्रंथों में इस संगीति का उल्लेख नहीं मिलता। अशोक की प्रशस्तियों में भी इसकी चर्चा नहीं है यद्यपि सारनाथ, साँची और कौशांबी की स्तंभ–लिपियों में अशोक ने अनाचारपरायण भिक्षुओं को श्वेत वस्त्र पहनवाकर निकाल देने का जो आदेश दिया है, उसके साथ इसका सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार ई. पू. तीसरी शताब्दी में इन ग्रंथों का संगृहीत होना सिद्ध होता है। पंडितों ने तीन पिटकों में से ही यह बात सिद्ध करने की कोशिश की है कि अशोक के बहुत बाद तक भी इनमें बहुत–सी बातें जोड़ी, बदली और सुधारी जाती रहीं। फिर भी इतना मान लेने में किसी को भी कोई आपत्ति नहीं कि ईसा मसीह के जन्म के दो सौ वर्ष पहले इन पिटकों के मुख्य भाग निश्चय ही संगृहीत हो गए थे, यद्यपि इनके वर्तमान रूपों में जो भाषा पाई जाती है, वह बुद्ध या अशोक के युग की भाषा नहीं हो सकती। पिटकों से ही पता चलता है कि अशोक के पहले ही बुद्ध–वचनों का भाषांतर करना शुरू कर दिया गया था। किसी–किसी ने तो संस्कृत में भी अनुवाद किया था, जिसका स्वयं बुद्धदेव ने निषेध किया था। इस प्रकार पिटकों में जो भाग सुरक्षित है, उसकी विशुद्धता संदेह से परे नहीं है।

ऊपर जो विवरण दिया गया है, वह पाली साहित्य का है। इसी को एकमात्र बौद्ध साहित्य मान लेना ठीक नहीं। जैसा कि ऊपर बताए हुए अशोक–संगीति के विवरण से स्पष्ट है, यह केवल एक संप्रदाय का संग्रह है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि यही बौद्धों का प्राचीनतम साहित्य है। चीनी तुर्किस्तान में पाए गए कुछ संस्कृत ग्रंथों ने पंडितों को यह सोचने को बाध्य किया है कि पाली और संस्कृत दोनों ही किसी एक ही सामान्य भाषा से संगृहीत ग्रंथों के रूपांतर हो सकते हैं। जो बात निस्संकोच कही जा सकती है, वह यह है कि अन्यान्य संप्रदाय के प्रामाणिक प्राचीन संग्रहों के अभाव में यही संग्रह (पालीवाला) हमारे लिए बुद्ध धर्म के मूल रूप को समझने में सर्वाधिक सहायक है। इनके अतिरिक्त संस्कृत और अर्धसंस्कृत में लिखे हुए अनेकानेक बौद्ध ग्रंथ पाए गए हैं और अब भी खोजकर निकाले जा रहे हैं। इनमें से अधिकांश ग्रंथों के अनुवाद चीनी, तिब्बती और मंगोलियन भाषाओं में सुरक्षित हैं। सच पूछा जाए तो ये अनुवाद ही बौद्ध संस्कृत–ग्रंथों की जानकारी के प्रधान सहायक हैं। इसकी चर्चा हम इसी प्रबंध में यथास्थान करेंगे।

(राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक
'हिन्दी साहित्य की भूमिका' से साभार)

दीक्षांत समारोह के लिए तैयारियाँ अंतिम चरण में

28 जून को विश्वविद्यालय पहुंचेंगी कुलाधिपति

27 जून, 2026। कुलपति प्रो. कविता शाह ने बताया कि विश्वविद्यालय का दशम दीक्षांत समारोह आगामी 29 जून, 2026 को अत्यंत गरिमामय एवं भव्य रूप से आयोजित किया जाएगा। कुलपति ने अपनी विज्ञप्ति में बताया कि जन भवन से प्राप्त सूचना के आधार पर विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल 28 जून को अपराह्न विश्वविद्यालय परिसर में आगमन करेंगी तथा अगले दिन आयोजित दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होकर विद्यार्थियों को उपाधि एवं पदक प्रदान करेंगी।

दीक्षांत समारोह की मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित पर्यावरणविद् एवं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. मधूलिका अग्रवाल होंगी। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय अति विशिष्ट अतिथि तथा उच्च शिक्षा राज्य मंत्री रजनी तिवारी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे। कुलपति ने बताया कि समारोह में कार्यपरिषद एवं विद्या परिषद के सभी सदस्यों की उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है, क्योंकि विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह की परंपरा के अनुसार विद्वत पदयात्रा उन्हीं के माध्यम से संपन्न होती है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के समस्त परिक्षेत्र से जनप्रतिनिधियों, संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों, विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट विभूतियों तथा आसपास के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को भी आमंत्रित किया गया है।

उन्होंने बताया कि दीक्षांत कार्यक्रम में एक से अधिक स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के माता–पिता को भी मंच तक आमंत्रित किया जाएगा, जिससे वे अपने बच्चों की उपलब्धि के इस गौरवपूर्ण क्षण के साक्षी बन सकें। विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांवों के छोटे बच्चों द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाएंगे। पर्यावरण संरक्षण विषयक आयोजित भाषण, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले तीन विद्यार्थियों को भी कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल द्वारा सम्मानित किया जाएगा। भाषण प्रतियोगिता में कक्षा–7 की खुशी कुमारी, निबंध प्रतियोगिता में कक्षा–8 की रंजनी गुप्ता तथा चित्रकला प्रतियोगिता में कक्षा–8 की मधु को पुरस्कृत किया जाएगा।

कुलपति ने बताया कि जनभवन से प्राप्त निर्देशों के आधार पर इस वर्ष दीक्षांत समारोह के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों से चार शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए निर्धारित प्रोफार्मा पूर्व में ही विश्वविद्यालय एवं संबद्ध महाविद्यालयों को उपलब्ध

करा दिया गया था। प्राप्त आवेदनों की स्क्रीनिंग के उपरांत चयनित शिक्षकों के नाम घोषित किए जाएंगे तथा उन्हें कुलाधिपति द्वारा मंच से सम्मानित किया जाए गा।

उन्होंने यह भी बताया कि दीक्षांत समारोह के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के आठ शिक्षकों द्वारा लिखित पुस्तकों का लोकार्पण भी मंच से कुलाधिपति के कर–कमलों द्वारा किया जाएगा, जो विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं शोधपरक उपलब्धियों का महत्वपूर्ण प्रतिफल है। साथ ही स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को उनके संबंधित संकायाध्यक्षों के माध्यम से प्रमाण–पत्र वितरित किए जाएंगे। इस बार समारोह की व्यवस्था पूर्व वर्षों की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित एवं सहभागी स्वरूप में की गई है।

कुलपति ने बताया कि कुलाधिपति की उपस्थिति गौतम बुद्ध प्रेक्षागृह के सभागार में रहेगी तथा वहाँ से संपूर्ण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकायों में किया जाएगा। संबंधित संकायों के विद्यार्थी अपने–अपने संकायों में बैठकर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण देख सकेंगे तथा इन स्थलों पर शिक्षकों की भी उपस्थिति रहेगी, जिससे अधिक से अधिक विद्यार्थी इस ऐतिहासिक अवसर के सहभागी बन सकें।



कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का दशम दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों की उपलब्धियों, शिक्षकों की प्रतिबद्धता और विश्वविद्यालय की शैक्षिक उत्कृष्टता का उत्सव है। माननीय कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी की गरिमामयी उपस्थिति इस समारोह को विशेष बनाएगी। इस वर्ष हमने समारोह को अधिक सहभागी, समावेशी, तकनीक–संपन्न और नवाचार आधारित स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है। विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं समाज के विभिन्न वर्गों की सहभागिता इस आयोजन को और अधिक अर्थपूर्ण बनाएगी। हमें विश्वास है कि यह दीक्षांत समारोह नई पीढ़ी को ज्ञान, नवाचार और सामाजिक दायित्वों के प्रति प्रेरित करेगा तथा विश्वविद्यालय की गौरवशाली परंपराओं को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

दशम दीक्षांत समारोह की सभी तैयारियाँ पूर्ण

28 जून। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में 29 जून 2026 को आयोजित होने वाले दशम दीक्षांत समारोह की सभी तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई हैं। 28 जून को विश्वविद्यालय में विद्या परिषद एवं कार्य परिषद की बैठक आयोजित की गई, जिसके उपरांत संपूर्ण कार्यक्रम का अंतिम पूर्वाभ्यास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह, कुलसचिव डॉ. अश्वनी कुमार, कार्य परिषद एवं विद्या परिषद के सदस्यों ने विद्वत परियात्रा के साथ दीक्षांत समारोह की तैयारियों का पूर्वाभ्यास किया।

इस वर्ष विश्वविद्यालय की कार्य परिषद में जनभवन द्वारा नामित दो नए सदस्य, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति अनिल कुमार तथा बापू महाविद्यालय, पीपीगंज, गोरखपुर की प्राचार्य डॉ. मंजू मिश्रा भी समारोह में सम्मिलित होंगी। दीक्षांत समारोह में 19 कार्य परिषद सदस्य एवं 51 विद्या परिषद सदस्य सहभागिता करेंगे।

दशम दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति एवं उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल करेंगी। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पर्यावरणविद् डॉ. मधुलिका अग्रवाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश की उच्च शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रजनी तिवारी उपस्थित रहेंगी। आज सायंकाल राज्यपाल का सिद्धार्थ विश्वविद्यालय आगमन प्रस्तावित है तथा उनके सम्मान में विश्वविद्यालय के कला संकाय सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

दीक्षांत समारोह का शुभारम्भ प्रातः 10.00 बजे वंदे मातरम् एवं राष्ट्रगीत की प्रस्तुति से होगा तथा समापन राष्ट्रगान एवं विद्वत पारियात्रा के प्रत्यावर्तन के साथ किया जाएगा।

इस वर्ष दीक्षांत समारोह का मुख्य आकर्षण स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी होंगे। विश्वविद्यालय द्वारा कुल 37 स्वर्ण पदक, जिनमें 13 डोनर स्वर्ण पदक शामिल हैं, प्रदान किए जाएंगे। विशेष रूप से 13 ऐसे विद्यार्थी हैं जिन्हें दो या दो से अधिक स्वर्ण पदक प्राप्त हो रहे हैं।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि दशम दीक्षांत समारोह केवल उपाधि वितरण का अवसर नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की उपलब्धियों, समाज के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता और नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का उत्सव है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व के समन्वय के साथ निरंतर नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है। यह दीक्षांत समारोह हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों और समस्त विश्वविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का गौरवपूर्ण प्रतीक बनेगा।

वार्षिक कला प्रदर्शनी–2026 आयोजित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में दिनांक 24 जून से 27 जून, 2026 तक कला संकाय के पेंटिंग रूम में वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसे बाद में इसे 28–29 जून को सम्बोधि लाइब्रेरी हॉल में प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने किया। उनके साथ कला संकाय की डीन (प्रो. नीता यादव), विज्ञान संकाय की डीन (प्रो. प्रकृति राय), वाणिज्य संकाय के डीन (प्रो. सौरभ), विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, अन्य अधिकारी और फैकल्टी सदस्य मौजूद थेय सभी ने छात्रों द्वारा बनाई गई कलाकृतियों की सराहना की। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के साथ–साथ कई संबद्ध कॉलेजों– खासकर राजेंद्र प्रसाद ताराचंद महाविद्यालय (निचलौल, महाराजगंज) और बुद्ध विद्यापीठ महाविद्यालय, सिद्धार्थनगर के छात्रों ने अपनी कलाकृतियाँ प्रदर्शित कीं। प्रदर्शनी में कई तरह की कलाकृतियां दिखाई गईं, जिनमें पेंटिंग, मूर्तियाँ और हस्तशिल्प से लेकर मधुबनी, गोंड, कलमकारी और मांडना जैसी लोककला शैलियाँ शामिल थीं। 10वें दीक्षांत समारोह में आए मेहमानों और मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी की बहुत तारीफ की और कहा कि ऐसे कार्यक्रम हर साल होने चाहिए, ताकि छात्र अपनी कला के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखा सकें। यह प्रदर्शनी विश्वविद्यालय के पेंटिंग विभाग के अतिथि शिक्षक– डॉ. उषा यादव और श्री फैजुल्ला अहमद तथा कला संकाय की डीन प्रो. नीता यादव की देखरेख में आयोजित की गई थी। इसके अलावा, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के 10वें दीक्षांत समारोह के दौरान, कुलपति प्रो. कविता शाह ने पेंटिंग विभाग की ओर से कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल को एक पेंटिंग भेंट की।





विद्वत परियात्रा आरंभ होने से पूर्व मा. कुलाधिपति जी को दीक्षान्त परिधान धारण कराती कुलपति जी



सभागार मे उपस्थित उपाधि एवं पदक प्राप्तकर्ता विद्यार्थी-शोधार्थी



कार्य परिषद के सदस्य मा. कुलाधिपति जी के साथ



दीक्षोपदेश के समय प्रतिज्ञा लेते उपाधि प्राप्तकर्ता



विद्या परिषद के सदस्य मा. कुलाधिपति जी के साथ



मा. कुलाधिपति जी को पुस्तकें भेंट करती कुलपति जी



पदक प्राप्तकर्ताओं के साथ मा. कुलाधिपति जी एवं मंचस्थ जन



मुख्य अतिथि प्रो. मधूलिका अग्रवाल जी को पुस्तकें भेंट करती मा. कुलाधिपति जी



विशिष्ट अतिथि मा. रजनी तिवारी जी को पुस्तकें भेंट करती मा. कुलाधिपति जी


मा. कुलपति जी दीक्षांत समारोह के मंच पर


मा. कुलाधिपति जी दीक्षांत समारोह के मंच पर



कुलाधिपति जी द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान प्राप्त करते डॉ. शिवम शुक्ल



दीक्षांत समारोह में मा. कुलाधिपति जी का सम्बोधन



दीक्षांत समारोह से पूर्व एक कार्यक्रम में मा. राज्यपाल


मा. उच्च शिक्षा राज्यमन्त्री श्रीमती रजनी तिवारी जी का सम्बोधन


दीक्षांत समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित वार्षिक कला प्रदर्शनी-2026